वर्ष 26
अंक 6

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

जून
1999

कहानियां

कविताएं

लेख

स्तम्भ

चित्रकथाएं

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।
कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) विनय जोशी
सहायक सम्पादक विमलेश आहूजा
कला निर्देशक दीपक बग्गा

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. इंग्लैण्ड £7, अमेरिका $12 कनाडा $15
जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. इंग्लैण्ड £100, अमेरिका $150 $200
एक प्रति : 4/- रु



ROYAL®
X-L-N-T
BISCUITS
Full of Serength
A Choice of
Winners
ROYAL
X-L-N-T
Milk &
Glucose
Biscuits
ROYAL BISCUITS PVT. LTD.
34, Sector-1, Parwanoo (H.P.) 173 220

सबसे पहले

दीनू गाँव में रहता था। धूप में खेत में काम करता रहता। वर्षा या ठण्ड में भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह भोजन में भी रूखी-सुखी रोटी प्याज या मिर्ची के साथ ही खा लेता। कभी-कभी तो नमक लगाकर ही उसे खानी पड़ती। फिर भी वह कभी बीमार नहीं पड़ता था।

छुट्टियों में राजू शहर से जब गाँव में नानी के घर आया तो दीनू को देखकर बोला—अरे इतनी गर्मी में जायेगा तो बीमार पड़ जायेगा। परन्तु हुआ उलट ही। दीनू तो ठीक रहा पर राजू ही बीमार पड़ गया।

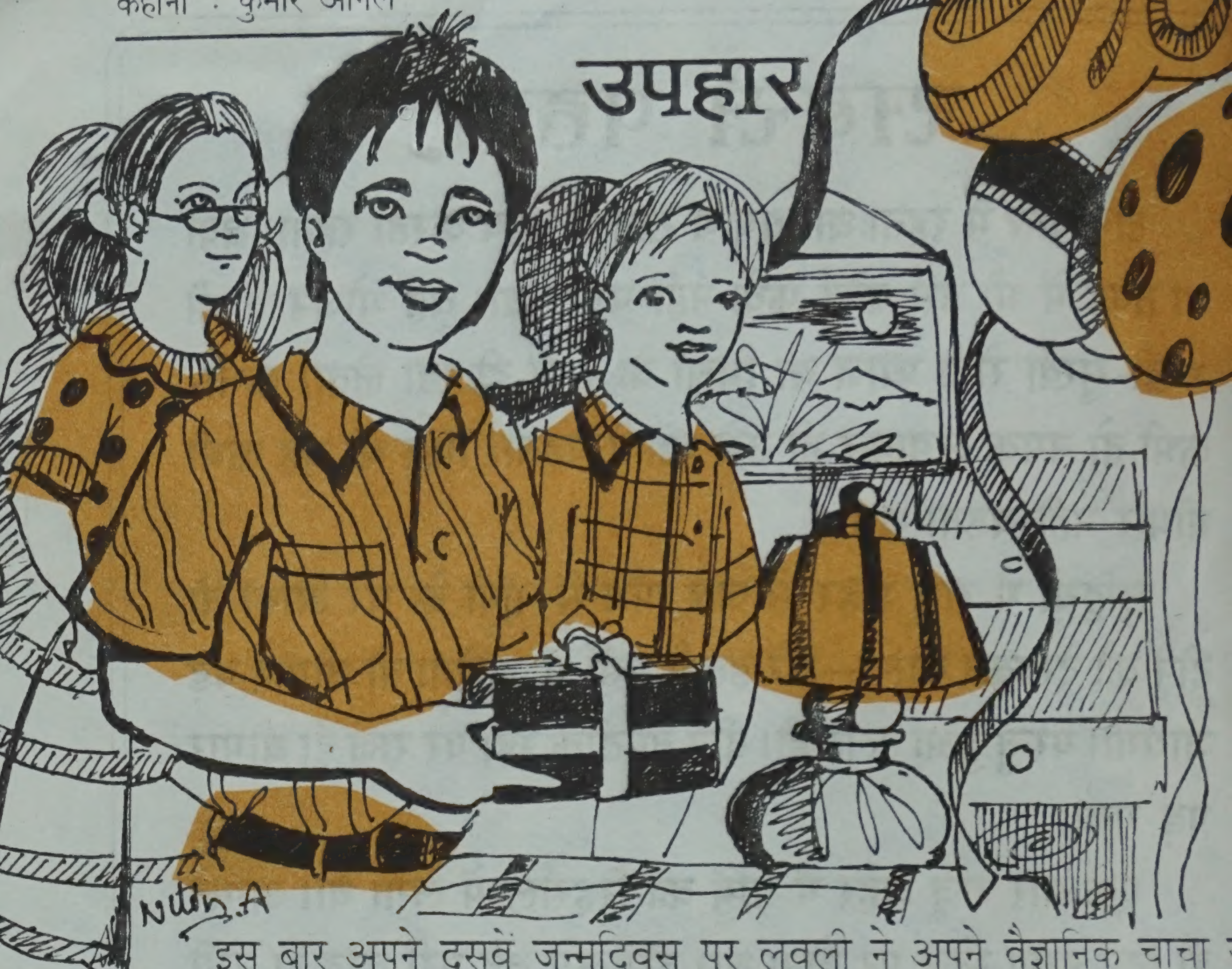
एक बार राजू शहर में ड्रामें की रिहर्सल में लगा था। अगले ही दिन ड्रामा स्टेज पर होना था। इसलिये वह पूरी तरह से उसी की तैयारी में जुटा हुआ था। उसे न भूख लग रही थी न प्यास, न उसे टी.वी. अच्छा लग रहा था न रेडियो। अगले दिन जब ड्रामा सफ़ल हो गया तो उसकी भूख व प्यास भी ठीक हो गई।

उपरोक्त दोनों ही घटनाएं ये दर्शाती हैं कि विकास के लिये शारीरिक श्रम व मानसिकता को केन्द्रित कर लेना आ जाना चाहिये। शारीरिक श्रम जितना अधिक होगा शरीर उतना ही स्वस्थ व पुष्ट होगा। रूखी-सुखी रोटी भी लाभदायक फ़ल ही देगी और मानसिक शक्तियां केन्द्रित रहने से ज्ञानेन्द्रियाँ जागृत रहेंगी। इस प्रकार दोनों प्रकार से मनुष्य सफलता को प्राप्त होगा।

प्यारे साथियों! छुट्टियों में इन दोनों ही शक्तियों का अभ्यास करो ताकि सफलता तुम्हारे कदम चूमने को सदा तैयार रहे।

— विनय जोशी

उपहार



इस बार अपने दसवें जन्मदिवस पर लवली ने अपने वैज्ञानिक चाचा से बहुत प्यारा सा उपहार पाया था। इसी बीच गर्मी की छुट्टियाँ आ गयीं। ए सुबह अच्छे मूड में देख उसने माँ को नानी जी के घर जाने के लिये मना लि था। उसकी नानी जी गाँव में रहतीं थीं। गाँव पहुँचकर लवली मौका मिलते वहाँ अपने मित्र पोपली के घर की तरफ चल दिया। पहले ही मोड़ पर मह मिल गया था और उसने पूछा—कहो लवली, कब आये?

लवली ने भी तपाक से हाथ मिलाया। अब जो बात उसने पोपली से बोल के लिए सोच रखी थी वह बात मुँह खुलते ही उसके होठों से बाहर आ ग महेश से हाथ मिलाते ही वह बोला—गर्मी की छुट्टियाँ हुई और चैलेंज स्वीक कर पहुँच गये हम भी।

—चैलेंज—महेश बाल खुजलाने लगा था।

—कैसा चैलेंज— वह बोला।

—पोपली घमंडी.. अभिमानी से!—

महेश उछलकर यूँ पीछे हट गया था मानो मधुमक्खी ने डंक मार दिया हो क्योंकि आज तक किसी को भी पोपली को घमण्डी कहते नहीं सुना था। हाँ, ऐसा कहते अवश्य सुना है कि इस बालक में साधना की भावना कूट-कूटकर भरी है। कुछ देर के बाद वह फिर बोला—पिछली बार की छुट्टियों के बाद तो आप आज ही गाँव आए हो।

फिर आप पोपली के बारे में ऐसा कैसे कह सकते हो?

पिछली बार की ही बात बता रहा हूँ। वह बोला—याद करो पंचायत भवन के बाहर बहुत से बच्चे जमा थे। गाँव की भाषा में पोपली ने दो-तीन गाने सुनाये थे। इस पर मैं अंग्रेजी का एक गाना सुनाने लगा था और...

पोपली हँसने लगा था और अधिकतर बच्चे उठकर जाने लगे थे। मैंने ही तो उठकर चले आने का इशारा किया था।

आप लोगों के उठकर चले आने के बाद, महेश, जानते हो पोपली ने गर्दन नचाकर कहा—अंग्रेजी गाना गाकर अपनी शान जमाना चाहते थे। लो बड़ी शानदार शान झोली में डाल लो। और खिलखिलाकर हँसता हुआ पोपली मुड़कर देखे बिना ही चला गया था। आप इसे चैलेंज देना चुनौती देना नहीं कहोगे तो और क्या कहोगे? बोलो महेश, अब चुप क्यों खड़े हो?

कुछ भी कहने के लिए महेश के पास नहीं कुछ था। तब लवली ही आगे बोला—उस चैलेंज का जवाब देने ही तो आया हूँ।





कुछ देर से पास आन खड़ा अ
चुपचाप सारी बात सुन रहा रमेश अब बो
पड़ा था—तो इस बार लवली हिन्दी व
गाना सुनने को मिलेगा हम सबको आ
से?

गर्व से लवली ने गर्दन तान ली थी
क्या बात कही है रमेश आपने। पोपली औ
मैं दो-दो गाने आप सबको सुनाएंगे। व
पंचायत भवन के सामने वाले पीपल
नीचे बैठ सुनाएंगे। फैंसला फिर आ
सबका होगा कि प्रतिष्ठा पाने का हकद
कौन होगा पोपली अथवा लवली? रमेश
महेश क्यों कुछ गलत कहा मैंने?

अभी तो पोपली अपने मामा जी की सगाई पर मिठाई खाने गया हुअ
है। उसके गाँव लौटने पर ही ... महेश बोला।

—पोपली आता रहेगा यार महेश। प्यारा सा एक गाना तो अपने मेहमा
गायक से अभी सुनेंगे वहाँ चौधरी चाचा की ट्राली पर बैठकर सुनेंगे। मेरा क
लवली मानेगा और अपनी भुजा लवली के गले में डाल दीं।

लवली को कुछ सूझ नहीं रहा था कि अब क्या कहूँ? हल्का सा मुस्कुराभ
दिया बस। रमेश उमंग से भरा लवली के साथ चौधरी चाचा की ट्राली की दिश
में बढ़ता गया।

इधर जैसे-जैसे ट्राली निकट आती जा रही थी लवली की हालत पतल
होती जा रही थी जन्मदिन पर चाचा जी से उपहार में मिला वह वैज्ञानिक यन
जिसकी सहायता से वह पोपली को नीचा दिखाना चाहता था, इस समय तो उसक
निक्कर की जेब में नहीं था। अभी तो वह यन्त्र नानी के घर रखे अटैची के
में ही बन्द पड़ा था। वह तो अभी केवल पोपली के साथ प्रतियोगिता का समय



निर्धारित करने के विचार से ही निकला था। वह इतनी कठिन परिस्थिति में फंस जाएगा, ऐसी तो उसने कल्पना भी न की थी।

बातों ही बातों में वे ट्राली के पास पहुँच गये। लवली को ट्राली पर चढ़ने में कठिनाई हो रही है। दो लड़कों ने ऐसा सोच उसे उठाकर झटपट चौधरी चाचा की ट्राली पर बैठा दिया था। उसके पूरे शरीर पर जैसे मोटी-मोटी चींटियाँ सी लोटने लगीं थीं। 'क्यों चले थे विज्ञान का बेईमान प्रयोग करने? क्यों झूठ को विज्ञान की मदद से सच बनाकर दिखला सम्मान पाना चाहते थे? क्या, बहुत अच्छे वैज्ञानिक यन्त्र का गलत इस्तेमाल करने के विचार से गाँव आए थे? क्यों इतने प्यार भरा वह उपहार चाचा जी ने तुम्हें दूसरे को पीड़ा पहुँचा प्रसन्नता पाने के लिए दिया था न?'

वो लो पोपली भी आ गया—एकाएक रमेश कह उठा था। तुरन्त महेश ने घोषणा कर दी थी, चलो अब सब पंचायत भवन तक ही चलते हैं।

बिल्कुल ठीक—लवली ने ट्राली से नीचे छलांग लगा दी थी। इसी के साथ अपनी नानी जी के घर की तरफ दौड़ते हुए वह चिल्लाया था आप लोग चलो, नानी अम्मा से कहकर मैं बस अभी आया।

फिर लौटकर लवली पंचायत भवन के सामने वाले पीपल के पास पहुँच इस समय अपने चाचा जी से पाया वह उपहार भी अब उसकी जेब में था। आ बढ़ बड़े उत्साह से उसने पोपली से हाथ मिलाया था। उसके इस बदले रूप व महेश और रमेश अभी समझने की कोशिश ही कर रहे थे कि पोपली के कं पर हाथ रखता वह बोला—मेरी यह छोटी सी भेंट स्वीकार करोगे, पोपली? औ लवली ने अपनी हथेली पोपली के आगे फैला दी थी।

उत्सुकता से भर पोपली ने पूछा—यह क्या है लवली?

इस पर लवली ने लाल बिन्दु को नाखुन से तनिक दबा दिया था। शी ही एक मधुर गीत के स्वर से सारा वातावरण भरने लगा था। उपकरण को अप उंगलियों में लेता पोपली कह उठा था—इतना छोटा रिकार्ड प्लेयर। चाहे को मुँह में छिपा ले सब सोचेंगे कि वही गा रहा है।



अच्छा जी, अब समझे कमर के पीछे हाथ ले जाते हुए महेश ऊँचे स में बोला—तो इसलिये इस शान से लवली जी महाराज, आप हमारे गाँव पोपली से मुकाबला करने चले थे?

अब तक बच्चों ने लवली के गिर्द घेरा सा बना लिया था। उन सब आँखें एक साथ लवली पर जा टिकीं थीं। उधर लवली की पलकों पर चम उठे आँसू उन्हें जैसे चुप रहने का इशारा करने लगे थे। गर्दन नीची किये लव बोला—वैज्ञानिक यंत्र पास रहे तो सचमुच ऐसा ही लगता है कि मैं कुछ कर सकता हूँ; चाहे कैसा भी धोखा देकर बड़ी सफाई से बच निकल सक हूँ। पर अगर उस क्षण पोपली न आ गया होता और लवली अपनी रूलाई काबू नहीं रख पाया था।

—यह सत्य है बच्चों के हृदय अधिक समय तक बुराई को नहीं रख सक

□□

दो कविताएं : यश खन्ना 'नीर'

1. आया जून



आया है फिर जून महीना,
तपता माथा, जलता सीना।

नल से जल तो गुम है भैया,
सूखे हैं सब ताल-तलैया,
ढूँढ़ रहे हम पेड़ की छैया,
तन से टपके गर्म पसीना।

कूलर-पंखे के गुण गाएं,
फ्रिज-सुराही मन को भाएं,
कुल्फी खाएं, ठण्डक पाएं,
अच्छा लगता शर्बत पीना।

गरमी की छुट्टियाँ हैं यारों,
होमवर्क झटपट कर डारो,
पार्क में फिर चल शाम गुजारो,
कट जाएगा जून महीना।

२. बादल आओ

बादल आओ, बादल आओ,
रिमझिम-रिमझिम जल बरसाओ।

गरमी हमको झुलसा देगी,
सिर को धूप से चकरा देगी,
छतरी बनकर अब छा जाओ,
बादल आओ, बादल आओ।

सूखे हैं सब ताल-तलैया,
भर दो जल से इनको भैया,
मल-मलकर हमको नहलाओ,
बादल आओ, बादल आओ।

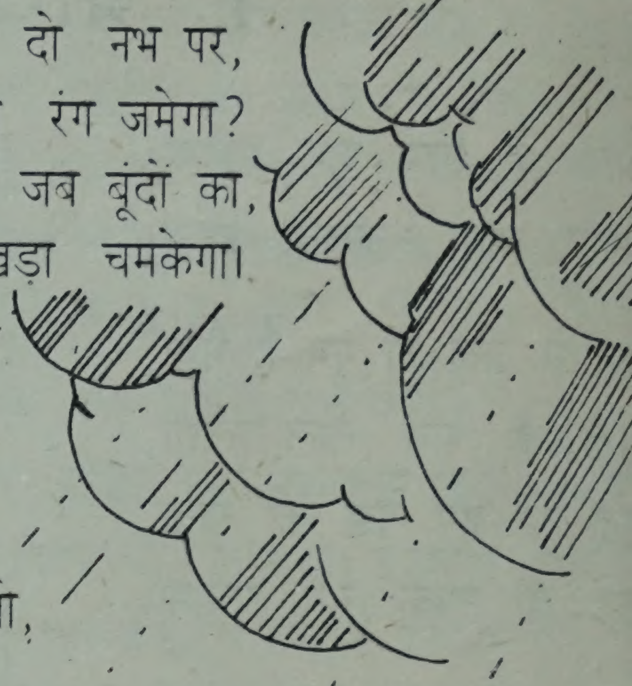
पंछी भूले गाना-वाना,
देखो पौधों का मुरझाना,
आकर अपना रंग दिखाओ,
बादल आओ, बादल आओ।



कविता : हरिसिंह 'हरीश'

बादल तो छाने दो नभ पर



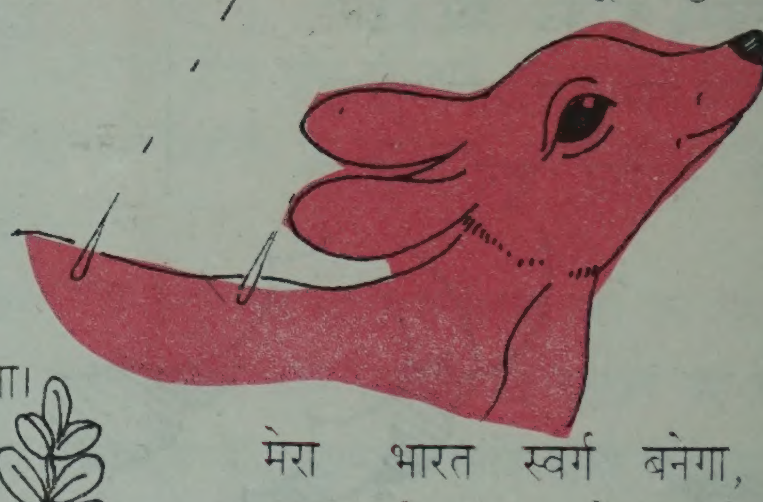


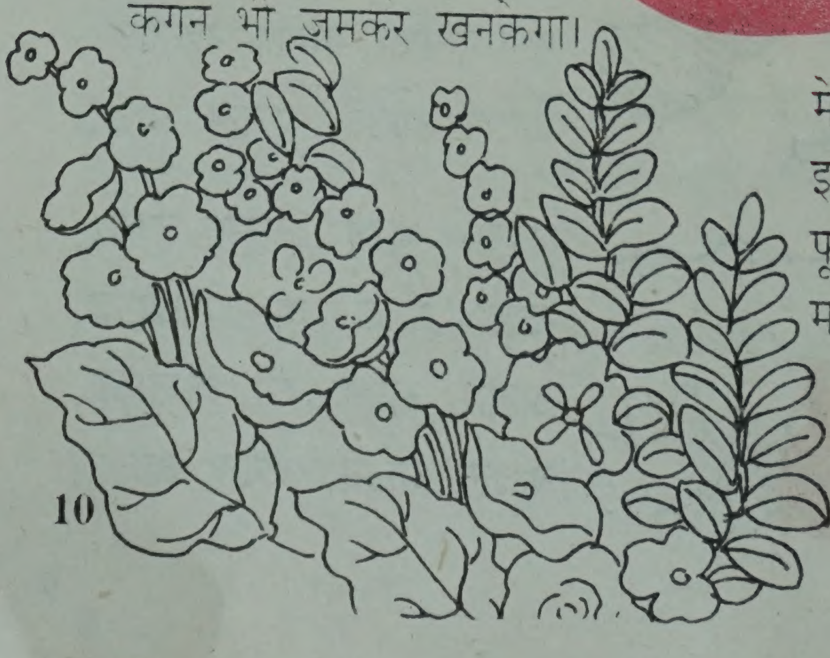
बादल तो छाने दो नभ पर,
फिर देखो क्या रंग जमेगा?
रिमझिम-रिमझिम जब बूंदों का,
धरती पर मुखड़ा चमकेगा।

भूखी-प्यासी वसुन्धरा का,
पेट भरेगा, प्यास बुझेगी।
गेहूँ, चना मटर चावल से
जब जीवन में आस भरेगी।
हर किसान का मुखड़ा फिर तो,
सोने के जैसा दमकेगा।

हरखू अपना हल लेकर के,
खेतों में जायेगा हँसकर,
खिला बदन फूलों-सा होगा,
खलियानों में निशदिन बसकर।
धन्नों के माथे पर फिर तो
सोने का झूमर झुमकेगा

राधा की मंगनी हो लेगी।
सीता का भी ब्याह रचेगा।
मगनूं, धौलू, कलिया, गोबर,
नहीं कोई बिन ब्याह बचेगा।
चूड़ी संग-संग हाथों में,
कगन भी जमकर खनकेगा।





मेरा भारत स्वर्ग बनेगा,
इस धरती पर सारे जग में
फूल खिलेगें गुलशन-गुलशन,
मखमल जब छायेगी मग में।
जीवन सबका बेला जैसा,
गाँठ-गाँठ पर आ गमकेगा।

रोहित का बगीचा

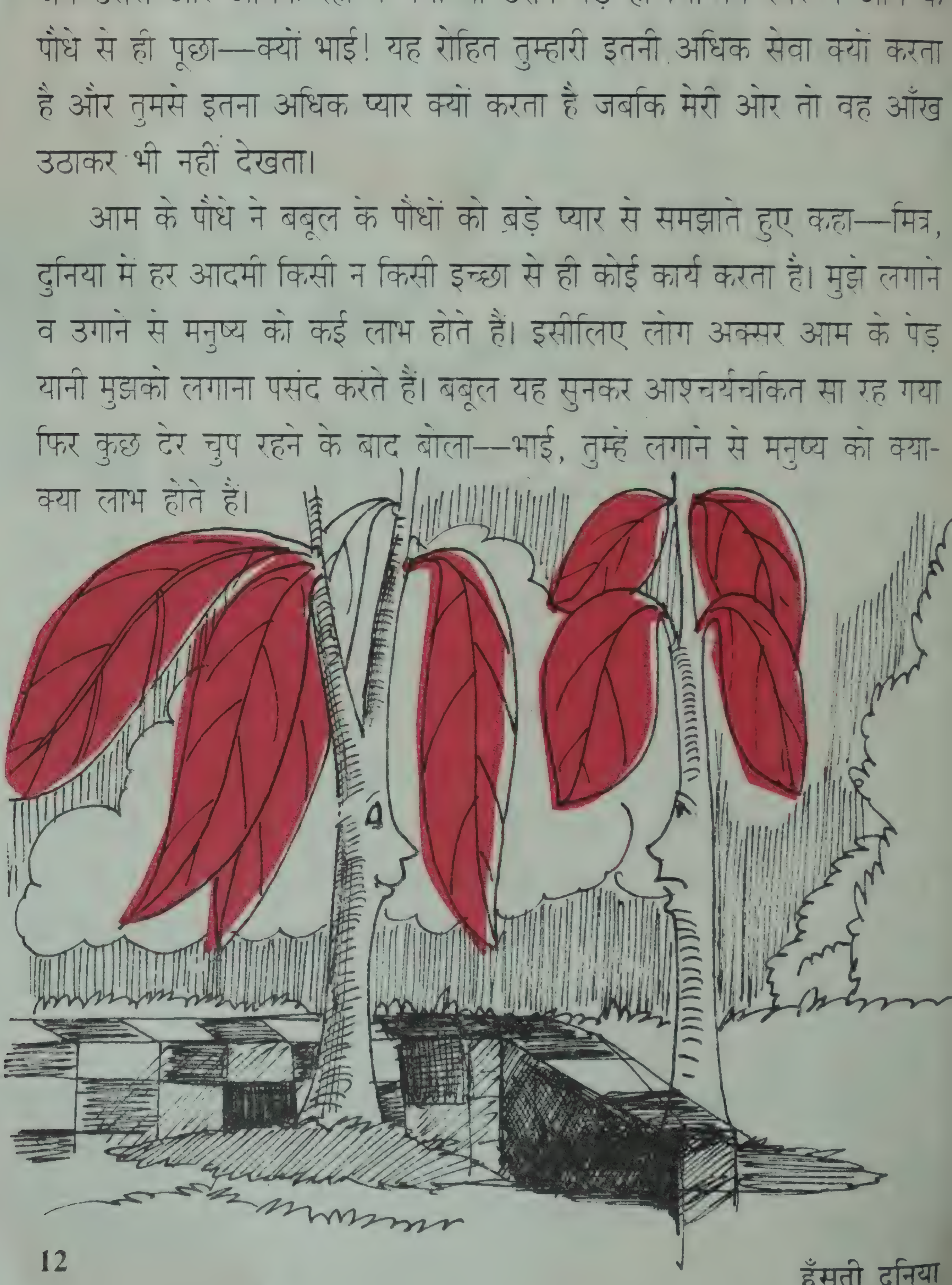


रोहित को पेड़-पौधे तथा वनस्पति से बहुत लगाव था। जब भी उसे अपनी पढ़ाई-लिखाई के काम से फुर्सत मिलती वह पेड़-पौधों के बारे में पढ़ता रहता था। उसने अपने घर के सामने फालतू पड़ी जमीन में एक छोटा मगर बहुत ही सुंदर बगीचा लगाया तथा अपने फुर्सत के समय में उसमें काम करता रहता था। पेड़-पौधों को पानी देना, निराई-गुड़ाई करना, क्यारियाँ सजाना तथा पौधों को खाद पानी व मिट्टी देना थोड़े ही समय में रोहित की मेहनत और लगन के परिणाम स्वरूप बगीचा हरा-भरा हो गया। क्यारियों तथा बगीचे की शोभा मन को मोह लेती थी। बगीचे में उसने एक आम का पौधा भी लगाया था। पौधे की हरी-हरी कोमल पत्तियाँ देखने में बड़ी लुभावनी लगती थीं। अच्छी तरह से हो रही देखभाल के कारण आम का पौधा तेजी से बढ़ रहा था।

बगीचे की चारदीवारी के उस तरफ न जाने कैसे एक बबूल का पेड़ उग आया था। उस बबूल के पेड़ को आम के पौधे की सुंदरता और ठाट-बाट देखकर मन

ही मन बहुत ईर्ष्या होती थी। वह मन ही मन बहुत दुःखी रहता था। उसे यह चिन्ता सताने लगी कि कोई उसकी भी सेवा आम के पौधे की तरह क्यों नहीं करता? कोई उसकी भी उचित देखभाल और सेवा-टहल क्यों नहीं करता। वह हर समय इसी तरह की बात सोच-सोचकर मन ही मन में कुंठित रहता। एक दिन जब उससे और अधिक रहा न गया तो उसने बड़े ही चिन्तित स्वर में आम के पौधे से ही पूछा—क्यों भाई! यह रोहित तुम्हारी इतनी अधिक सेवा क्यों करता है और तुमसे इतना अधिक प्यार क्यों करता है जबकि मेरी ओर तो वह आँख उठाकर भी नहीं देखता।

आम के पौधे ने बबूल के पौधों को बड़े प्यार से समझाते हुए कहा—मित्र, दुनिया में हर आदमी किसी न किसी इच्छा से ही कोई कार्य करता है। मुझे लगाने व उगाने से मनुष्य को कई लाभ होते हैं। इसीलिए लोग अक्सर आम के पेड़ यानी मुझको लगाना पसंद करते हैं। बबूल यह सुनकर आश्चर्यचकित सा रह गया फिर कुछ देर चुप रहने के बाद बोला—भाई, तुम्हें लगाने से मनुष्य को क्या-क्या लाभ होते हैं।





आम के पौधे ने विनम्रपूर्वक फिर उससे कहा—मित्र, मुझे लगाने से कई लाभ होते हैं। जैसे जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब राहगीरों को छाया दूँगा। मेरे पेड़ के पत्ते, छाल और फूल से दवाईयाँ बनती हैं। मेरा फल सारे फलों से अधिक स्वादिष्ट पौष्टिक तथा मधुर रसीला होता है। इसलिए मुझे फलों का राजा भी कहा जाता है।

आम के पौधे की सारी बात सुनकर बबूल का पेड़ उदास हो गया तथा आवेश में आकर बोला—तो इसमें मेरा क्या दोष है? प्रकृति ने जैसा मुझे बनाया है वैसा ही तो मैं रहूँगा फिर भला इसमें मैं क्या कर सकता हूँ।

आम के पौधे ने उसे बड़े ही धीरज और प्रेमपूर्वक समझाते हुए कहा—मित्र, इसमें क्रोध जैसी कोई बात नहीं है, तुम व्यर्थ ही क्रोध के आवेश में आ गये। प्रकृति ने हम सबको जैसा बनाया है वैसा तो हमें रहना ही पड़ेगा मगर कम से कम अपने स्वभाव पर नियंत्रण करके उसे ठीक तो बना सकते हैं। किसी को देखकर मन ही मन जलना-भुलना तथा कुढ़ते रहना कहाँ की अच्छी बात है। हमें हर हाल में खुश होकर जीना चाहिए और हँसते-हँसते मुश्किलों से जूझकर उन्हें आसान बनाना चाहिए।

आम के पौधे की बात बबूल के पेड़ को सही व उचित लगी। उसने उसी समय से ईर्ष्या करना छोड़ दिया और आम के पेड़ से दोस्ती कर ली व खुशी-खुशी रहने लगे। दोनों पेड़ों की बातें सुनकर रोहित भी खुशी से नाच उठा। ❑

बाल कहानी: टेक ढींगरा 'चन्द'

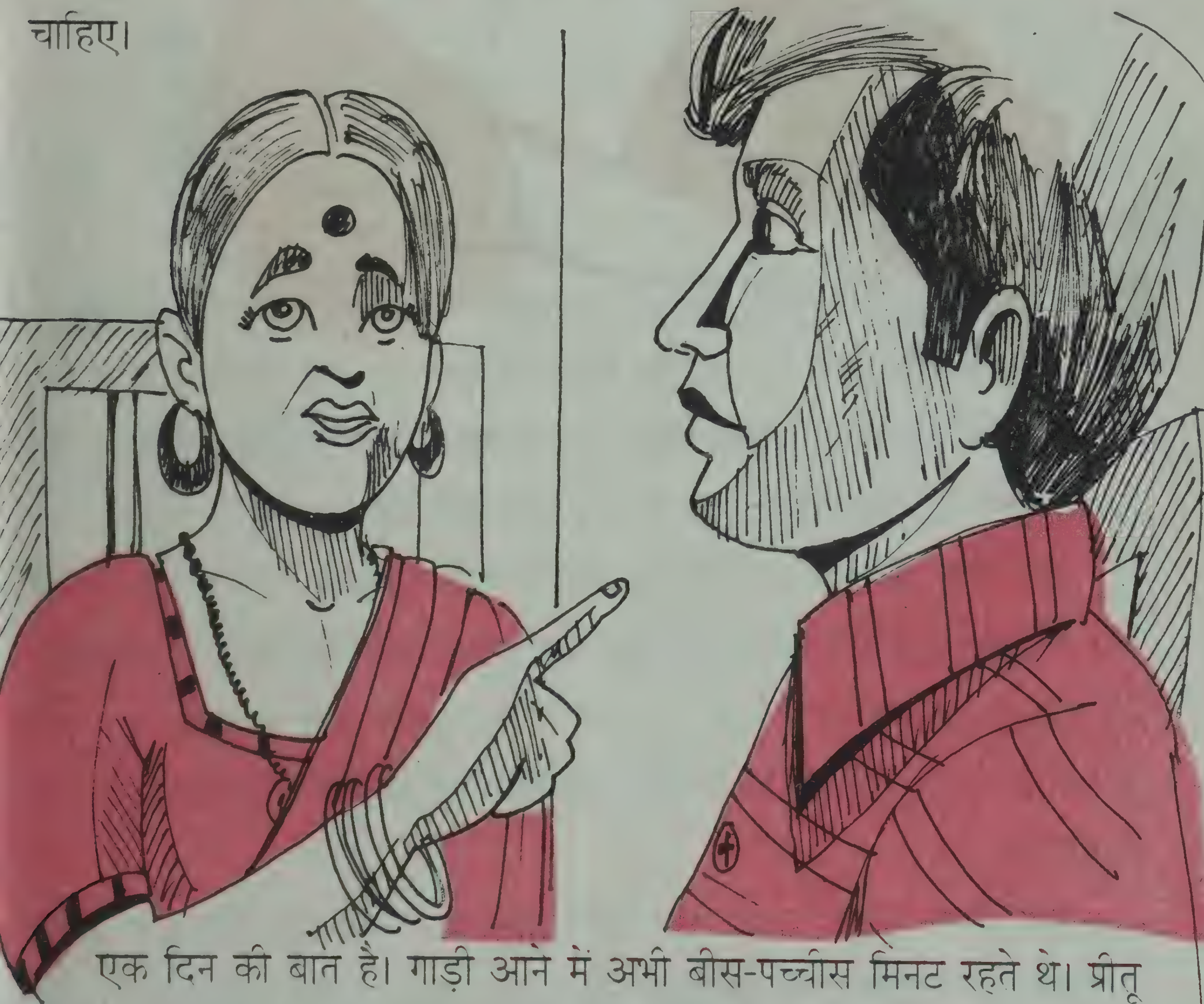
समय की कद्र

एक गाँव में प्रीतू नामक एक व्यापारी रहता था। वह बिस्कुट व टॉफियां क
व्यापार करता था। वह पास वाले शहर से थोक के भाव बिस्कुट व टॉफियाँ खरीदत
व आस-पास के गाँव में दुकानदारों को बेच आता। जिससे उसे थोड़ी बहुत कमा
होती। इस तरह उसकी गुजर-बसर बढ़िया हो रही थी।

वह सुबह रेलगाड़ी में शहर जाता और शाम को अपने सामान की खरीददा
करके रेलगाड़ी में ही वापिस आ जाता। घर से स्टेशन वह पैदल ही जाता। ज
गाड़ी आने में दस-पंद्रह मिनट रह जाते तो वह घर से चलता जबकि घर से स्टेश
तक का सफर बीस-पच्चीस मिनट का था। इस तरह प्रीतू अक्सर गाड़ी के सम
से दस-पंद्रह मिनट लेट पहुँचता। जिस दिन गाड़ी लेट होती, उस दिन तो को
बात नहीं लेकिन जिस दिन गाड़ी अपने सही समय पर आ जाती, उस दिन उ
बहुत कष्ट होता। वह अभी आधे रास्ते में ही होता कि उसे गाड़ी के आने क
आवाज़ सुनाई देती। फिर वह भागा-भागा स्टेशन पहुँचता। तब तक गाड़ी चल
चुकी होती और वह चलती हुई रेलगाड़ी में ही चढ़ जाता।



उसके घरवालों व पड़ौसियों ने उसे कई दफा समझाया कि वह स्टेशन पर सही समय पर पहुँच जाया करे। समय की इज्ज़त करे। जो समय की इज्जत नहीं करता तो समय भी उसकी इज्ज़त नहीं करता। इसलिए हमेशा गाड़ी के आने के समय से पाँच मिनट पहले उसे स्टेशन पहुँच जाना चाहिये। नहीं तो कभी धोखा खाओगे। किन्तु प्रीतू के कान पर जूँ न सरकी। वह पहले की तरह ही, गाड़ी आने के दस मिनट पहले ही घर से चलता जबकि उसे बीस-पच्चीस मिनट पहले चलना चाहिए।



एक दिन की बात है। गाड़ी आने में अभी बीस-पच्चीस मिनट रहते थे। प्रीतू ने अपना सामान पैक करना शुरु किया। इस तरह उसके लगभग दस मिनट लग गए। प्रीतू ने सामान से भरे हुए दो थैलों को उठाया और स्टेशन की ओर चल पड़ा। वह अभी स्टेशन से दूर था कि उसे गाड़ी के आने की आवाज़ सुनाई दी। फिर क्या था, प्रीतू पूरी तेजी के साथ भागा। जब वह स्टेशन पर पहुँचा तो गाड़ी चल चुकी थी। उसने अपने एक हाथ से गाड़ी के डिब्बे के डण्डे को पकड़ा और गाड़ी पर चढ़ने की कोशिश करने लगा क्योंकि गाड़ी तेज हो चुकी थी और दूसरे



हाथ में सामान के थैले थे, इसलिए गाड़ी के डण्डे पर पूरी तरह पकड़ न हो की वजह से उसका हाथ डण्डे से छूट गया। वह फिसलता हुआ लाईनों में गि पड़ा। गाड़ी के नीचे आकर उसकी एक टाँग कट गई।

बड़ा भयानक दृश्य था। प्रीतू की रोने-चिल्लाने की आवाजें सुनी नहीं जा रह थीं। स्टेशन पर खड़े लोगों ने उसे फटाफट उठाया और पास वाले अस्पताल ले गए। किसी जान-पहचान वाले ने प्रीतू के घर सूचना भेजी तो उसके घर वाले दौड़े-दौड़े आए। प्रीतू की घरवाली का रो-रोकर बुरा हाल था। सभी उसे दिलास दे रहे थे।

उसी समय डाक्टर आया और उसने प्रीतू की मरहम-पट्टी की। प्रीतू अपन घरवाली और पड़ौसियों की ओर बिटर-बिटर देख रहा था। उसकी आँखों से आँसूअ की गंगा बह रही थी।

आज प्रीतू बहुत पछता रहा था। वह इस बात पर बहुत पश्चात्ताप कर रह था कि उसने समय की इज्ज़त नहीं की अगर वह घरवालों व पड़ौसियों की बात मानकर समय की इज्ज़त करता तो उसके साथ यह दुर्घटना न घटती और वह अपाहिज न होता।

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : अवतार 'कैथ' (बुढलाडा)

- अच्छे बोल ही हमारा आदर करवा सकते हैं जबकि बुरे बोल हमेशा अनादर का कारण बनते हैं।
- अनुशासन में रहने से जीवन में स्थिरता आती है।
- सद्गुरु का आशीर्वाद मूर्ख को भी ज्ञानी बना देता है।

— निरंकारी संत

- परमात्मा की जानकारी के बिना आत्मा का कल्याण होने वाला नहीं।
- परमात्मा के दर्शन हो जाने पर नफरत की भावना स्वयं समाप्त हो जाती है।
- सच्चा भक्त वो है जो हर हाल में प्रभु का शुक्र करता है।
- जो स्वयं को छोटा तथा दूसरों को बड़ा मानता है वही प्रशंसनीय है।
- दूसरों से ईर्ष्या करना अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारने के बराबर है।
- अपनी सलाह तब तक किसी को न दो जब तक आपको सलाह देने के लिए कहा न जाए।
- दूसरों को गिराकर आगे बढ़ने वाले को आखिर गिरना ही है।

— निरंकारी बाबा

- चेतनता के कारण ही उत्तम इन्सान कहलाता है। नहीं तो पशुओं से भी बुरा है।

— उपनिषद

- ताज पहनने वाला सिर हमेशा बेआराम रहता है।

— शेक्सपीअर

- जिस देश के लोग अपने विचारों में तंगदिल हों वो देश कभी महान नहीं बन सकता।

— जवाहर लाल नेहरु

अनूठी बातें पशु पक्षियों की

संकलन : ईलू रानी

पशु-पक्षियों का जगत बड़ा विचित्र है। आइए, जीव-जन्तुओं व पशु-पक्षियों की कुछ अनूठी बातें बताते हैं।—

- अपने जंगली जीवन में हाथी कई महीनों तक बैठता नहीं है। वह किसी बड़े वृक्ष का सहारा लेकर खड़े-खड़े ही सोता है।
- हाथी की सूंड में चालीस हजार स्नायु होते हैं और वह अपनी सूंड से एक टन वजन उठा सकता है।
- सब पशुओं में जिराफ ही एक ऐसा प्राणी है जो कि किसी भी प्रकार की आवाज नहीं करता, हैरानी की बात तो यह है कि जिराफ के 'स्वर यंत्र' ही नहीं होता।
- संसार में चार हजार प्रकार की मक्खियाँ उड़ती हैं।
- हमारे देश में कीड़े-मकौड़ों की तीस हजार जातियाँ मिलती है।
- सारी दुनिया में चिड़ियों की आठ हजार जातियाँ हैं।
- खरगोश जन्म के पश्चात् दस दिन तक अंधा और बहरा होता है। इसका जीवन भी काफी कम होता है, केवल पाँच वर्ष।
- सिर्फ गिरगिट में नर गिरगिट ही रंग बदल सकता है, मादा नहीं।
- घोड़ा खड़े-खड़े सपने देखता है। जब वह डरावने सपने देखता है तो जोर जोर से उछलने लगता है।
- लाल मुँह का बन्दर अपनी परछाई से डरकर दूर भागता है।
- भालू जंगलों में 'हीरे' की खोज भी करता है यदि हीरा मिल जाता है तो उसे किसी पेड़ के नीचे छिपा देता है।
- मेंढक की जीभ उसके मुख के आगे के भाग से बढ़ती है।
- सफेद भालू शिकार से पूर्व अपने शिकारी को खूब प्यार करता है।
- बंदर और बंदर जैसा प्राणी 'ऐप्स' में यह फर्क है कि 'ऐप्स' की पूँछ नहीं होती और उसके हाथ उसके पैर से बड़े होते हैं।
- चीता एक घंटे में 90 कि. मी. तक की दौड़ लगा सकता है।
- चील बहुत ऊँचाई से भी अपने शिकार को पैनी निगाहों से देख लेती है

ज्ञान विज्ञान : प्रो. परशुराम शुक्ल

कृत्रिम विश्व बायोस्फेयर II



अन्तरिक्ष पर अपना अधिकार जमाने के बाद अब विश्व के विकसित देश अन्तरिक्ष में बस्तियाँ बसाने की योजना बना रहे हैं। इस दिशा में जर्मनी ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सहयोग से उल्लेखनीय प्रगति की है। जर्मनी के विख्यात वैज्ञानिकों ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कैलीफोर्निया स्थित नासा आम्स रिसर्च सेन्टर के वरिष्ठ वैज्ञानिक राबर्ट मैकाइल के निर्देशन में कृत्रिम उपग्रह के पर्यावरण में मानव का अध्ययन करने के लिए पिरामिड के आकार का एक विशालकाय कृत्रिम विश्व बायोस्फेयर II तैयार किया है।

आपको शायद विश्वास नहीं हो रहा होगा, किन्तु यह सच है कि जर्मनी ने एक कृत्रिम विश्व की रचना की है। आरीजोना रेगिस्तान के मध्य में स्थापित काँच के इस विश्व में एक समुद्री झील, उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन, 6 मीटर गहरा एक छोटा-सा समुद्र (जिसमें लहरें भी उठती हैं) समुद्र के मध्य मूँगे की एक दीवार, घास का मैदान तथा कच्चे पक्के मकान हैं। इसमें बन्दर जंगली सूअर, भेड़-बकरियाँ, मुर्गे-मुर्गियाँ, शहद की मक्खियाँ, चींटे-चींटियाँ, मकड़ियाँ,बतखें तथा मछलियाँ एवं इसी प्रकार के बहुत से जीव जन्तु विचरण कर रहे हैं। इनके मध्य चार पुरुष तथा चार स्त्रियाँ दो वर्षों तक लगातार रहेंगे। इस मध्य सभी का बाहरी विश्व से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। बायोस्फेयर II के लोगों को अपने भोजन की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ेगी। इसके लिए वे खेती करेंगे तथा साग-सब्जियाँ, फल आदि उगायेंगे। यहाँ तक कि इन्हें अपने नहाने तथा कपड़े धोने के लिए साबुन तक स्वयं तैयार करना होगा।

आरम्भ में इस कृत्रिम विश्व को बाहरी वायुमण्डल से हवा मिलेगी, लेकिन कुछ समय बाद यह सम्बन्ध भी समाप्त कर दिया जायेगा और तब आठों शोधकर्ताओं तथा उनके साथी जीव-जन्तुओं को अपने ही वायुमण्डल में सांस लेनी होगी।

बायोस्फेयर II परियोजना के दो उद्देश्य हैं। पहला विशिष्ट प्रकार क पर्यावरण के मानव जीवन, जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों आदि पर पड़ने वाले प्रभावों क अध्ययन। दूसरा—अन्तरिक्ष में बस्तियाँ बसाने के लिए एक आदर्श उपग्रह कं तैयारी।

बायोस्फेयर II छः भागों में विभाजित है। पहले भाग में सभी आठ शोधकत रहेंगे। प्रत्येक के पास 32 वर्गमीटर का एक आरामदायक फ्लैट होगा, जिसम अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के कम्प्यूटर युक्त अत्याधुनिक उपकरण लगे हैं ये उपकरण इतने संवेदनशील हैं कि प्रत्येक गतिविधि के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को तुरन्त बता देंगे। यहाँ एक पुस्तकालय, एक अत्याधुनिक प्रयोगशाल तथा अन्य पाँचों भागों का अवलोकन करने के लिए एक ऊँचा मंच है। इससे लगे हुए दूसरे भाग में दो हजार वर्गमीटर कृषिभूमि है, जिसमें चावल, विभिन्न प्रकार के फलों, सब्जियों एवं वनस्पतियों की खेती की जा सकती है। इस भाग में बकरा-बकरी, मुर्गा-मुर्गी आदि जीव भी हैं, जो शोधकर्ताओं को दो वर्षों तव भोजन उपलब्ध करायेंगे। यहाँ हरे-भरे फलदार वृक्षों से घिरा हुआ एक छोटा स तालाब है जिसमें विभिन्न प्रकार की मछलियाँ और बतखें हैं। तीसरे भाग में एव उष्णकटिबन्धीय वर्षा वन है। यह भाग लगभग 26 मीटर ऊँचा है। यहाँ लगभग तीन सौ किस्म के जंगली वृक्ष हैं, जिन्हें जीवित रखने के लिए कृत्रिम वर्षा करायी जाती है। इसी भाग में एक झरना है जो बहता हुआ अगले भाग तक जाता है चौथे भाग में घास का विशाल मैदान है। यहाँ अफ्रीका दक्षिणी अमरीका तथ आस्ट्रेलिया से लाये गये वृक्ष लगाये गये हैं। कुछ वृक्ष ऐसे हैं जो चट्टानों प उगते हैं। इनके लिए इसी प्रकार की चट्टानों की व्यवस्था की गयी है। पाँचवें भाग में दलदल तथा एक छोटा सा समुद्र है, जिसमें ऊँची-ऊँची लहरें उठती हैं। इस समुद्र में मूँगों की एक दीवार भी है। अन्तिम भाग में एक रेगिस्तान है जो मैक्सिकन बाजा, कैलीफोर्निया जैसा बनाया गया है। सम्पूर्ण बायोस्फेयर II में लगभग तीन हजार आठ सौ जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों की प्रजातियाँ हैं। बायोस्फेयर II का बाहरी विश्व से कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु इसकी बाहरी दीवारों तथा छत

(शेष पृष्ठ 24 पर

कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

धरती



हरी-भरी उपजाऊ यह
धरती है बड़े काम की।
सबको जीने का हक यहाँ,
यह धरती अरे राम की।

फूल-पात अन्न जल देती,
शस्य श्यामल धरती यह।
रत्नों का भरा खजाना,
वसुन्धरा है धरती यह।

जन्म यही देती हमको,
यही पालती सदा हमें।
निज ममतामयी गोद में,
यही सुलाती सदा हमें।



धर्म-देश के सांचों में
मत धरती को बाँटो तुम
धरती तो है माँ सबकी,
मत टुकड़ों में काटो तुम।

दादा के उत्तर

— रजनी शेट्टी (नोएडा)

प्रश्न : दादा जी, अहंकार बुरी चीज है तो इसे दूर कैसे करें?

उत्तर : बहुत बुरी। नम्रता से इस पर काबू पाया जा सकता है।

प्रश्न : क्या पैसा ही सब कुछ होता है?

उत्तर : नहीं।

— ओम सिंह (भीम ब्यावर)

प्रश्न : आने वाला भविष्य कैसा आएगा शुभ या अशुभ; बताएँ?

उत्तर : भविष्य से पहले वर्तमान की चिन्ता करो, वर्तमान शुभ होगा तो भविष भी शुभ होगा।

— अशोक (सतना)

प्रश्न : दादा जी, सत्संग में हम गीत गाते हैं तो साध संगत उठकर पैसे देती हैं इसक क्या मतलब है, क्या पैसा लेना उचित है?

उत्तर : सद्‌गुरू के गुणगान से श्रोता प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं, पैं तो प्रतीक हैं।

प्रश्न : दादा जी, जब बाहर से कोई ज्ञान प्रचारक हमारे ब्रांच में सत्संग भवन में पधारते हैं तो सर्व साध संगत उठकर खड़ी हो जाते हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर : यह तो आदर का प्रतीक है। सत्कार हमारे मिशन का मौलिक सिद्धान्त है; इसे छोड़ना ठीक नहीं।

— बलविन्द्र सिंह (मकडोना कलां, रोपड़)

प्रश्न : परमात्मा के बारे में दुनिया को कब से ज्ञान हुआ?

उत्तर : जब से परमात्मा है।

— चंचल, भीम (पालड़ी, अजमेर)

प्रश्न : दो व्यक्ति झगड़ते हों तो हमारा क्या कर्तव्य है?

उत्तर : उन्हें प्यार और नम्रता से समझाना, परन्तु किसी एक का पक्ष लेना ठीक नहीं।

प्रश्न : आज के समय की सबसे बड़ी सच्चाई क्या है?

उत्तर : स्वार्थ तथा झूठ।

— स्मिता खत्री (गोंदिया)

प्रश्न : कुछ लोग इस परमपिता परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के बावजूद झगड़ा क्यों करते हैं उनमें अभिमान और क्रोध की भावना क्यों होती है?

उत्तर : क्योंकि उन्होंने ज्ञान लेने का रिवाज पूरा किया है, ज्ञान लिया नहीं।

प्रश्न : इन्सान को अपनी हार का एहसास कब होता है?

उत्तर : जब उसका फल सामने आता है।

— श्याम कुकरेजा (दोंडाईचा)

प्रश्न : दादा जी, अगर भगवान सभी इन्सानों की सूरतें और शक्लें एक जैसी बनाता तो क्या होता?

उत्तर : दुनिया खूबसूरत नहीं रहती।

— सोनाली अरोड़ा (फरीदाबाद)

प्रश्न : सम्पूर्ण श्रद्धा वाली और स्वार्थ रहित भक्ति कैसे की जा सकती है?

उत्तर : पूर्ण समर्पण से।

— रामकुमार मेश्राम (डोंगरगाँव)

प्रश्न : ईमानदार व्यक्ति को हमेशा दुःख और तकलीफ सहना पड़ता है ऐसा क्यों?

उत्तर : कीमती और अच्छी वस्तु का मूल्य अधिक देना होता है। या यूँ कहें कि सोना भट्ठी में तपकर ही और अधिक चमक पाता है।

प्रश्न : इन्सान सबसे ज्यादा दुःखी कब होता है?

उत्तर : जब स्वार्थ की शर्तें न हो।

— बलविन्द्र सिंह (मकडोना कलां, रोपड़)

प्रश्न : दादा जी, मनुष्य दौलत की कब तक चाहत रखता है?

उत्तर : जब तक दौलत की सच्चाई का भेद नहीं जानता।

प्रश्न : परमात्मा की दी हुई दो अनमोल आँखों के बावजूद मनुष्य ठोकरें क्यों खाता है?

उत्तर : इनको खुली रखना भूल जाता है।

(पृष्ठ 21 का शेष) बायोस्फेयर II

पर काँच होने के कारण इस पर सूर्य का सीधा प्रभाव पड़ता है, जिससे दिन इसका तापमान पच्चास डिग्री सेन्टीग्रेट या इससे भी अधिक बढ़ सकता है। इस अनेक जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों के समाप्त होने की स्थिति उत्पन्न हो सकत है। इन्हें बचाने के लिए बायोस्फेयर II में 27 एयरकंडीशनर लगाये गये हैं ज इसके भीतर 27 डिग्री सेंटीग्रेट तापक्रम तथा 85 प्रतिशत आर्द्रता बनाये रख का कार्य करते हैं।

बायोस्फेयर IIमें अनेक प्रकार के कम्प्यूटराइण्ड उपकरण लगे हुए हैं। इन पाँच सौ कम्प्यूटर तो ऐसे हैं जो चौबीस घंटे चालू रहते हैं और बायोस्फेयर I के भीतर होने वाले सभी परिवर्तनों को रिकार्ड करते हैं। बायोस्फेयर II में कम्प्यूट के माध्यम से वर्षा करायी जाती है। समुद्र में लहरें उठाने, झरने को गति दे तथा इसी प्रकार के अन्य कार्यो के लिए दो हजार से अधिक कम्प्यूटराइण्ड उपकर लगाये गये हैं। इतने सारे उपकरणों को विद्युत सप्ताई के लिए बायोस्फेयर I भीतर ही एक बिजलीघर भी बनाया गया है। इस विद्युत घर के लिए बाहर डाली गयी एक पाइपलाइन के द्वारा गैस सप्लाई की जाती है जो जेनरेटर के टर्बाइ के लिए ईंधन का काम करती है। इसके साथ ही साथ बायोस्फेयर II के बाह तीन बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाएँ बनायी गयी हैं, जिनमें लगे हुए अत्याधुनि कम्प्यूटराइण्ड यंत्र बायोस्फेयर II के भी भीतर की स्थिति पर पूरा नियंत्रण रख हैं।

कृत्रिम विश्व बायोस्फेयर II दूर से देखने पर विशालकाय पर्वताकार हीरे के समान मालूम पड़ता है। रात्रि के समय इसकी चमक बीस किलोमीटर की दू से देखी जा सकती है। बायोस्फेयर II स्टील के अस्सी शहतीरों को जोड़क बनाया गया है। इसमें छः हजार बड़े-बड़े काँच लगे हैं, जिन्होंने इसे ग्लास हाउ का रूप दे दिया है। यह बारह हजार वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। बायोस्फेय II के निर्माण में छः वर्षों का समय लगा है तथा एक करोड़ डालर का खर्च आय है।

कविता : प्रो. पी. आर. शुक्ल

मीठी बोली



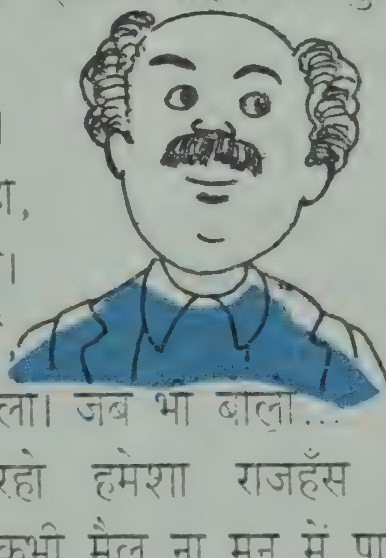
जब भी बोलो, मीठा बोलो।
सबके मन में मिसरी घोलो।



तोता कोयल मधुर बोल कर,
सबका मन हर्षाते हैं।
बुलबुल के मादक गीतों से,
प्राण हरित हो जाते हैं।
लेकर शिक्षा जीव जगत से,
इन्हीं समान तुम भी हो लो। जब भी बोलो...

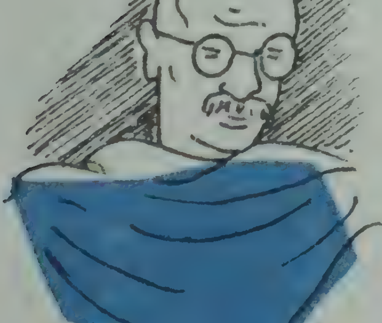


मीठी बोली का जादू तो,
अद्भुत रंग दिखाता है।
मानव की जीवन बगिया में,
फूलों की खुशबू लाता है।
मीठी बोली को वश में कर,
इसकी महिमा को तुम तो लो। जब भी बोलो...





मधुर बोलकर अनजानों को,
अपना मित्र बना सकते हो।
पत्थर दिल पिघला सकते हो,
बिगडे काम बना सकते हो।
सत्य और मीठे वचनों में,
तुम अपना तन बदन डुबो लो। जब भी बोलो...



रहो हमेशा राजहँस से,
कभी मैल ना मन में पालो।
निर्धन दीन दुःखी लोगों को,
हँसकर अपने गले लगा लो।
गौतम, गाँधी औ ईसा सम,
इनका दुःख निज हृदय समो लो। जब भी बोलो...

कहानी : गीता शर्मा

मेरी माँ



घंटी बजते ही सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षा से निकलकर खेल के मैदान की ओर दौड़ने लगे। सब बच्चे अलग-अलग खेल खेलने लगे। गीतांजली मैडम ने देखा—रवि किसी के साथ खेलने की बजाय उदास बैठा है। उसने रवि को आवाज दी।

रवि ने आँखें उठाकर ऊपर देखा तो सामने अपनी कक्षा अध्यापिका को खड़े देखा। वह कुछ सहम गया। तुम भी खेलो न। इस तरह तुम अकेले क्यों बैठे रहते हो? यह कहते ही गीतांजलि ने उसका हाथ पकड़ा और बच्चों की टोली में ले गयी।

मैडम गीतांजलि कई दिनों से नोट कर रही थी कि रवि कुछ गुमसुम सा रहता है। पढ़ाई में अच्छा है पर उसकी खेल में कोई रुचि नहीं है। बच्चों के खेल को देखते-देखते गीतांजलि की नज़र रवि की डायरी पर पड़ी। उसे आश्चर्य हुआ कि इतना छोटा-सा बच्चा डायरी लिखता है। अनायास वह डायरी के पन्नों को पलटने लगी। एक पन्ने पर लिखा था 12 सितम्बर 1998 माँ आज तुम्हें मुझसे बिछड़े [illegible] हो गये हैं।

तुम्हारे चले जाने के बाद पिताजी की अचानक बदली हो गयी और हम दिल्ली आ गये। माँ जाने क्यों आपके चले जाने के बाद ये घर उजड़ा हुआ लगता है।

जब भी मैं तुम्हारे बारे में पिताजी से बात करता हूँ तो हमेशा यह कहकर टाल देते हैं कि उदास मत हो। तुम्हारी नयी माँ पुरानी माँ से कितनी अच्छी है। हाँ माँ, नयी माँ भी इस घर में आ गयी है। लेकिन मुझे नयी माँ बिल्कुल अच्छी नहीं लगती।



उसका व्यवहार बहुत कठोर है। आज ही मैं कुछ देर से नहाया तो उन्होंने मेरे मुँह पर एक थप्पड़ जमा दिया, माँ तुम तो ऐसा नहीं करती थी। अगर करती भी थीं तो बाद में प्यार भी तो करती थीं। लेकिन यह माँ कभी प्यार नहीं करती उसने डायरी का अगला पृष्ठ खोला, लिखा था—

13 सितम्बर 1998। पिताजी नयी माँ के साथ कुछ दिनों के लिये जयपुर चले गये हैं। मैं घर में अकेला हूँ। कल मेरा जन्म-दिन है माँ। याद है मेरे जन्म-दिन पर कितनी शानदार पार्टी दी थी आपने। कितना प्यार किया था मुझको। लेकिन माँ पिताजी को इस बार ये भी नहीं याद कि कल मेरा जन्म-दिन है। क्या तुम मुझे आशीर्वाद देने आओगी माँ? लेकिन अब तुम कैसे आ सकती हो?

ये सब पढ़कर गीतांजलि मैडम सिहर उठी। उसके सम्मुख रवि की उदास तथा चिंतित मुद्रा घूम गई। विचारों में डूबी वह घर आयी और मन ही मन उसने एक निर्णय लिया। अगले दिन रवि स्कूल नहीं आया। गीतांजलि मैडम के अलावा उसके न आने का कारण कोई नहीं जानता था।

12 बजे छुट्टी हो जाने के बाद गीतांजलि ने सभी अध्यापिकाओं तथा क्लास के बच्चों को अपने घर पर शाम को 4 बजे बुलाया।

शाम को उसने दो बच्चों को भेजकर रवि को भी अपने घर बुलवा लिया। न चाहते हुए भी उसको मिस के घर आना पड़ा। मिस ने सभी बच्चों को रवि



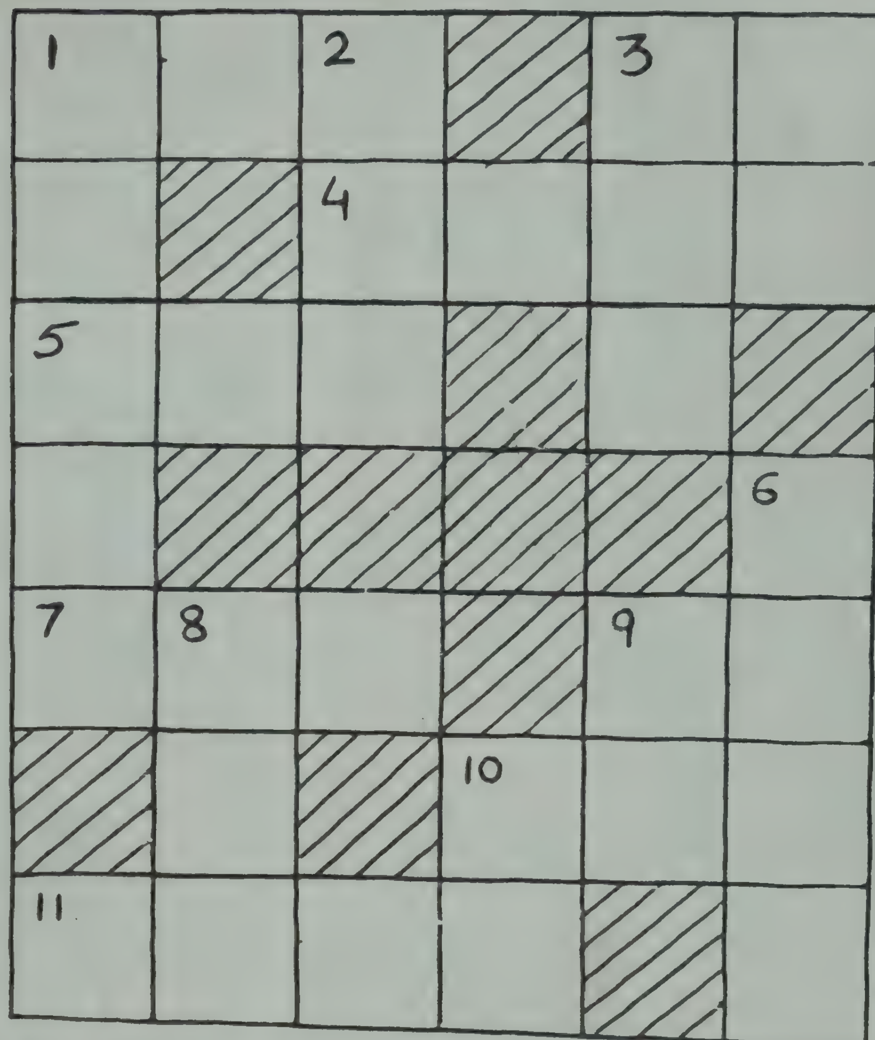
के जन्म-दिन के बारे में बता दिया। सभी बच्चों ने रवि के जन्म-दिन की तैय
बड़े प्यार से कर रखी थी।

रवि नें अन्दर घूसने के लिए जैसे ही कदम रखा कि रवि पर गुलाबों के फू
की वर्षा होने लगी तथा उसकी क्लास के सभी बच्चे रवि को जन्म-दिन मुबा
कहते हुए उसके पास आ गये। बच्चों ने रवि को फूलों के हार से लाद दि
यह सब देखकर वह खुश हो उठा और बोला—मिस आपने... रवि की बात बी
में ही काटते हुए वह बोली—तुम्हारी कोई दीदी नहीं है न? इसलिए तुम्हारी अ
से मैं दीदी हूँ। यह सुनकर रवि की आँखों में आँसू झलक उठे। यह आँसू उस
दुःख के नहीं खुशी के थे। रवि को दीदी के रूप में अपनी बिछुड़ी माँ जो मि
गयी थी वह दीदी के पैर छूने के लिए झुका किन्तु उसने उसे उठाकर गले
लगा लिया।

—वास्तविकता यही है कि अध्यापक व अध्यापिकाएँ पूरे समाज के टू
व ढ़ीलें बन्धनों व रिश्तों को जोड़ने व खुशहाल बनाये रखने की ताकत रख
हैं। उनका कार्य केवल पुस्तकें पढ़ाना ही नही है बल्कि प्यार व जागरूकता
बल पर सभी में ज्ञान का भण्डार भरना है।

वर्ग पहेली

□ विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)



बाएं से दायें

1. भारतीय राज्य जिसकी राजधानी दिसपुर है
3. फलों का राजा
4. पंजाब और .... की राजधानी चण्डीगढ़ है।
5. तमिलनाडु में बोली जांने वाली प्रमुख भाषा
7. सी.वी. .... को भौतिक शास्त्र में उनकी खोज 'रमन प्रभाव' के लिए नोबल पुरस्कार मिला।
9. भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान
10. भारत का प्राचीन विश्व विद्यालय : दा लं ना
11. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का पुराना नाम

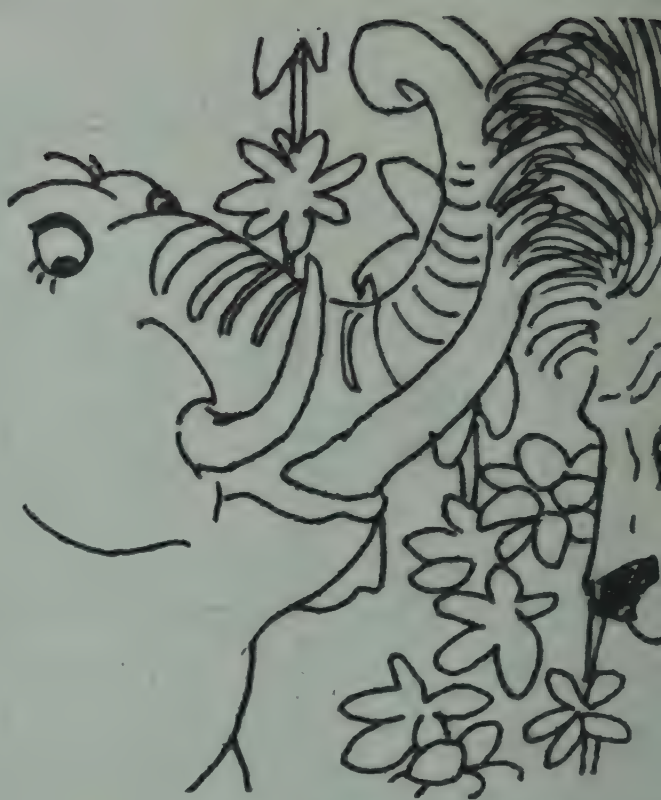
ऊपर से नीचे

1. पंजाब का प्रसिद्ध शहर जहाँ जलियांवाला बाग स्थित है।
2. बहुत बड़ा मकान जहाँ राजा महाराज रहते थे।
3. निर्यात का विपरीत शब्द
6. एक महान भारतीय कवि का नाम : स र दा सू
8. फिलीपिन्स की राजधानी का नाम
10. मेरी माता जी की माता जी मेरी   जी लगती हैं।

(यदि उत्तर नहीं निकाल पाएं तो वर्ग पहेली के उत्तर पृष्ठ 53 पर देखें)

दो बाल कविताएं : कु. अंशु शुक्ला

1. राजा का चुनाव



जंगल के पशुओं ने इक दिन,
अपनी सभा बुलाई।
कौन बने जंगल का राजा?
बोले गीदड़ भाई।
हाथी बोला सूँड उठाकर,
मुझे बना दो राजा।
हूँ मैं सबसे भारी भरकम,
खाता गन्ने ताजा।
चीता, भालू, बन्दर ने भी,
अपना नाम सुझाया।
लेकिन जंगल के पशुओं ने,
इन सबको ठुकराया।
इतने में ही बड़े गर्व से,
शेरू अन्दर आया।
उसे देखकर सब पशुओं ने,
अपना शीश झुकाया।



2. बन्दर और भ

एक था भालू एक था बन्दर
उन्हें नचाता एक कलन्दर।
दिनभर उनसे मेहनत लेता,
रात बाँध खूँटे से देता।
दोनों बहुत दुःखी हो
मन ही मन में वह पछ
इक दिन सोचा एक उ
ताकि उन्हें मुक्ति मिल
बन्दर ने घर के भीतर से,
लम्बा चाकू एक निकाला।
अपनी और मित्र भालू की,
काट रस्सियों को फिर डाल
जंगल में वह पहुँचे दो
गीत खुशी के गाते।
बन्धन में मत रहना ब
सीख हमें सिखलाते।

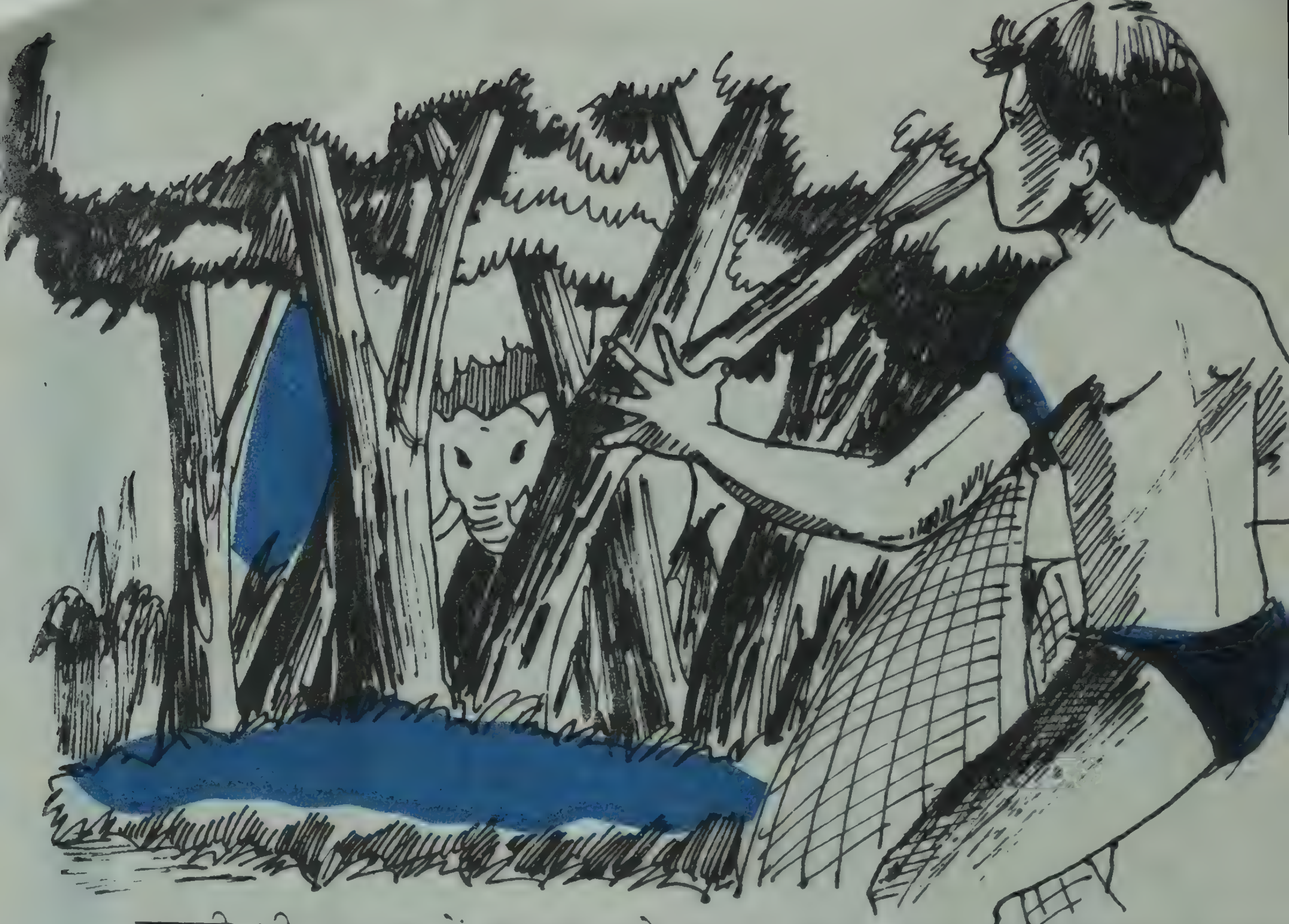
साहसी एतवा



एतवा साहसी और बहादुर लड़का था। वह करीब बारह साल का था। लेकिन गाँव के बड़े लोग भी उसके साहस का लोहा मानते थे। चमकता हुआ काला बदन और कमर में लंगोटी तनी हुई; मांसपेशियाँ और मुस्कराता हुआ चेहरा; यह था एतवा।

पहाड़ों से घिरे एक गाँव में एतवा रहता था। पहाड़ और उसके आस-पास जंगल ही जंगल था। जंगल के आस-पास छिटपुट रूप से बस्तियाँ बसी हुई थी। वे इतनी दूरी पर बसी थीं कि एक बस्ती से दूसरी बस्ती दिखायी नहीं देती थीं।

एक दिन एतवा मछली पकड़ने गया हुआ था। उसके हाथ में छोटा-सा जाल था। जाल घुमाकर वह पानी के ऊपर फेंकता था। जब जाल खींचता था तो पता चलता था कि मछलियाँ नहीं फंसी हैं। वह अनेक बार जाल फेंक चुका था। मगर मुश्किल से छोटी-छोटी आठ-दस मछलियाँ ही फंस पायी थीं। रात में जोरों की बारिश हुई। शायद वर्षा से सारी मछलियाँ बहकर नीचे की ओर चली गयीं थीं।



मछली की तलाश में एतवा आगे बढ़ता जा रहा था। घने जंगलों से घिरे पहाड़ और उसकी तलहट्टी में बहती नदियाँ-मौसम बरसाती था। हर ढ़लान से जल बह रहा था। जा़ल फेंकते हुए एतवा बहुत दूर बढ़ गया।

एकाएक एतवा के कानों में कुछ आवाज़ सुनाई पड़ी। आवाज पेड़ों की टहनियाँ टूटने की थी। वह समझ गया कि पास में ही हाथी है। टहनियाँ टूटने की आवाज तेज होती जा रही थी। यह समझने में भी उसे देर नहीं लगी कि हाथी गुस्साये हुए हैं।

तभी एतवा की नजर पास की झाड़ी पर पड़ी वहाँ एक हथिनी थी। उसके पास ही उसका नन्हा-सा एक बच्चा भी था। मछली पकड़ने की धुन में वह झाड़ी की ओर चला गया था। उसे देखकर ही हाथियों ने गुस्साना शुरू किया था।

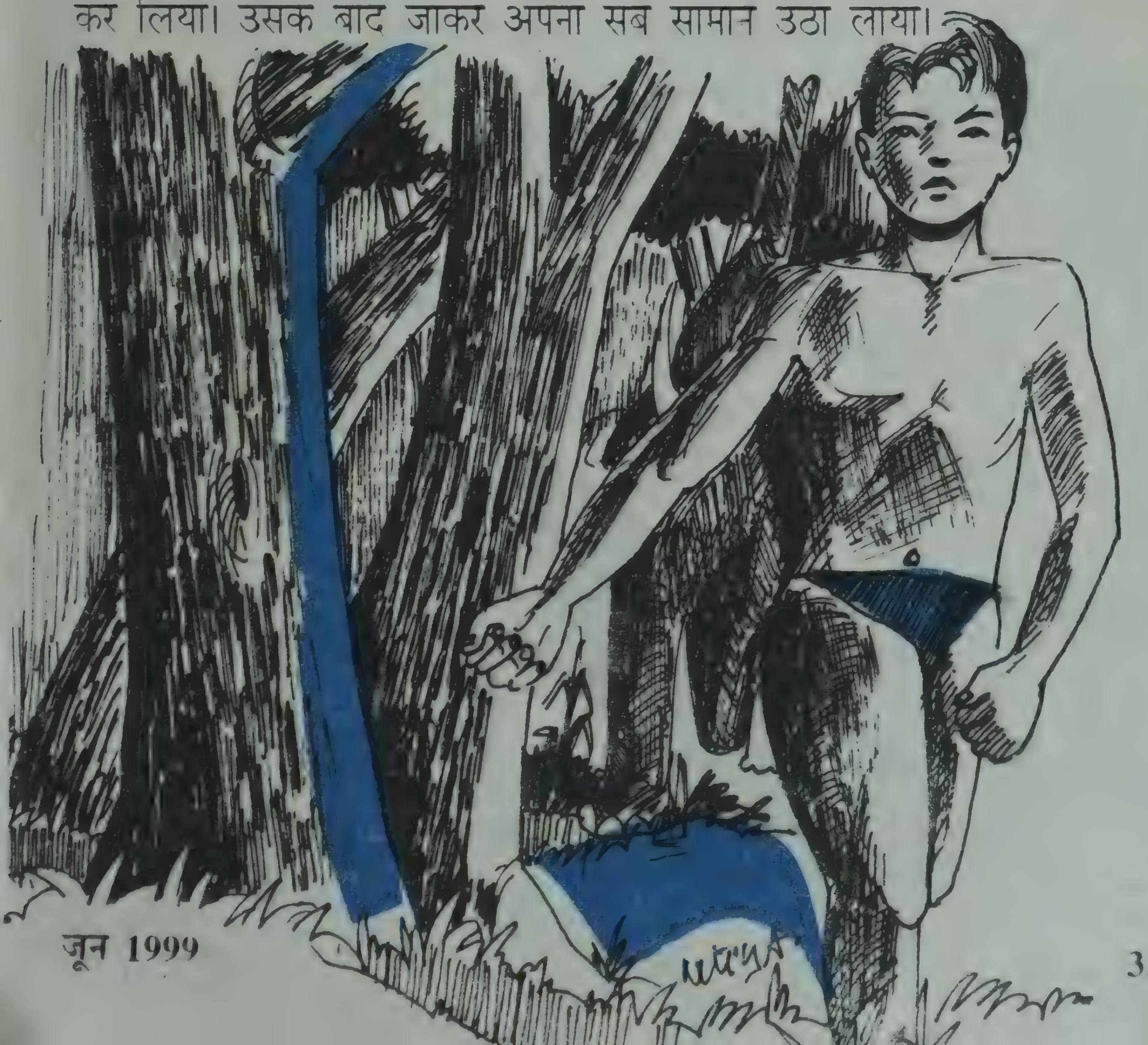
हाथियों को देखते ही एतवा सावधान हो गया। वहाँ खड़े रहना खतरे से खाली नहीं था। वह भागने लगा। तभी उसकी नज़र सामने की झाड़ी पर पड़ी। दो हाथी तेजी से उसकी ओर चले आ रहे थे। हाथी को देखकर एतवा घबराया नहीं। उसने हिम्मत से काम लिया। उसकी दाहिनी ओर ढलान थी। वह एक झटके से ढलान की ओर भागने लगा। दोनों हाथी एतवा का पीछा करने लगे।

ढालुआ रास्ता और हाथियों का भारी-भरकम शरीर। एतवा हाथियों की पकड़ में नहीं आया। हाथियों ने बहुत दूर तक उसका पीछा किया मगर बेकार। हाथियों की चंगुल से दूर निकल चुका था।

एतवा हाथियों द्वारा बहुत दूर तक पीछा किये जाने के कारण थककर चूर-चूर हो गया था। उसने नदी किनारे जाकर पानी पीया। नदी पथरीली थी। उसे पार करने के बाद एतवा सुस्ताने के लिये एक चट्टान पर बैठ गया।

भागते समय उसे ठोकर लग गयी थी वह गिरा भी था। उसके हाथ की मछली वाली टोकरी भी गिर गयी थी। जाल भी रास्ते में ही छूट गया था। हाथियों से पीछा छुड़ाने के लिये भागने के चक्कर में उसका सामान रास्ते में ही छूट गया था।

चट्टान पर पड़ा एतवा नीचे की ओर देख रहा था। उसे अपना सामान दिखायी दिया। गुस्साये हुए दोनों हाथी भी उसे दिखायी दे रहे थे। वे अपनी झुँड की ओर लौट रहे थे। कुछ देर में हाथी काफी दूर चले गये। एतवा ने कुछ देर आराम कर लिया। उसके बाद जाकर अपना सब सामान उठा लाया।



एतवा अपने घर से काफी दूर निकल आया था। दिन बीत चुका था। शा होने वाली थी। अंधेरा होने से पहले घर लौटना उसके लिये संभव नहीं था। जंगल और पहाड़ी रास्ते को अंधेरे में पार करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं थी। निकट की कि बस्ती में उसने रात बिताने की बात सोची।

बस्ती की तलाश में एतवा आगे बढ़ा। कुछ दूर जाने पर एक दूसरी पहा नदी मिली। नदी पतली थी। पार करना आसान लगा। लेकिन नदी में पैर रख ही एतवा झटके से पीछे हट गया। नदी का पानी गर्म था। एतवा को लगा उसके पैर जल जायेंगे। वह गरम पहाड़ के पास पहुँच गया था।

गरम पहाड़ की तलहट्टी में वन विभाग का विश्रामगाह था। एतवा को इसक जानकारी थी। वहाँ गरम जल का स्वीमिंग पुल बना हुआ था। गरम जल में स्ना का मजा लेने साहेब लोग वहाँ आते रहते थे। रात बिताने के लिये एतवा व चला गया। वहाँ के चौकीदार को वह जानता था। उसके पड़ोस के गाँव का थ उसका नाम था जतरु। एतवा को देखकर जतरु बहुत खुश हुआ।

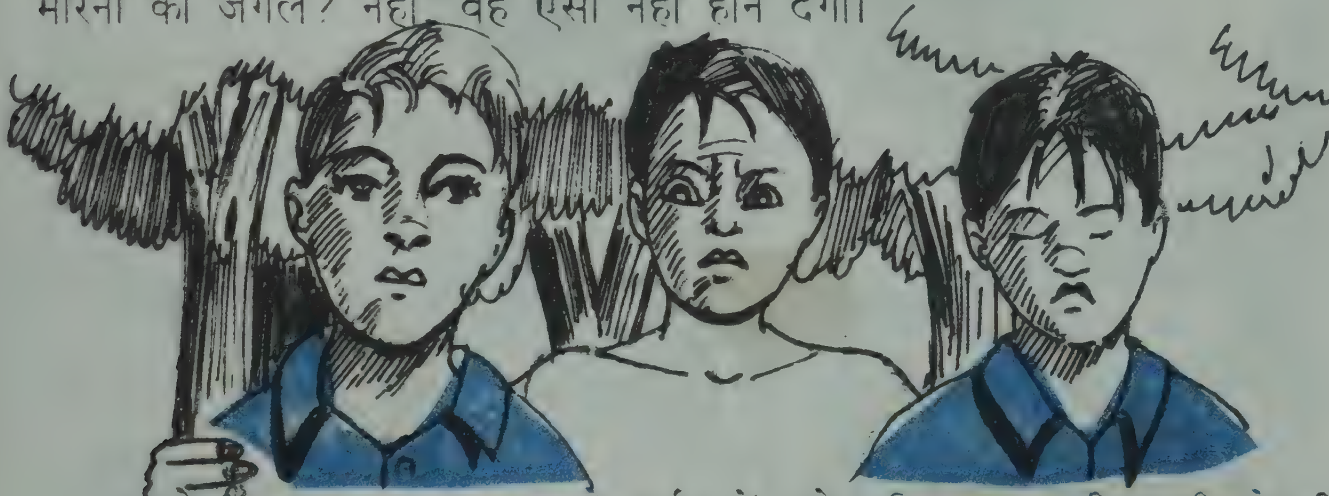
पहाड़ से गर्म जल का स्रोता फुटा हुआ था। को स्वीमिंग पुल की ओर मो दिया गया था। एतवा काफी रात तक स्वीमिंग पुल के गर्म जल में नहाता रह चौकीदार ने चावल पकाये। एतवा की टोकरी में कुछ मछलियाँ थीं। मछलिय को आग में भूना गया। खाने के बाद वह वहीं सो गया।



एतवा सबेरे तड़के ही उठ गया। बाहर निकला तो उसकी नजर मोरनियों के एक झुंड पर पड़ी। बहुत सी मोरनियाँ एक ही खेत में चुग रहीं थीं।

दो लड़के पास की मेड़ के पीछे छिपकर बैठे थे। एतवा की आहट पाकर मोरनियाँ भागने लगीं। दो को छोड़कर सभी मोरनियाँ भाग गयीं। उन दोनों मोरनियों के पाँव किसी चीज में फंस गये थे। फंसी हुई मोरनियों को दोनों लड़कों ने पकड़ लिया। मोरनियों को पकड़कर भागने लगे।

अब पूरी बात एतवा की समझ में आ गयी थी। लड़के मोरनी को फाँसने के लिए फंदा लगाये हुए थे। दोनों का यह रोज का धंधा होगा। एतवा ने इसका अनुमान लगा लिया। इस तरह तो सारी मोरनियाँ ही खत्म हो जायेंगी। बिना मोर-मोरनी का जंगल? नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगा।

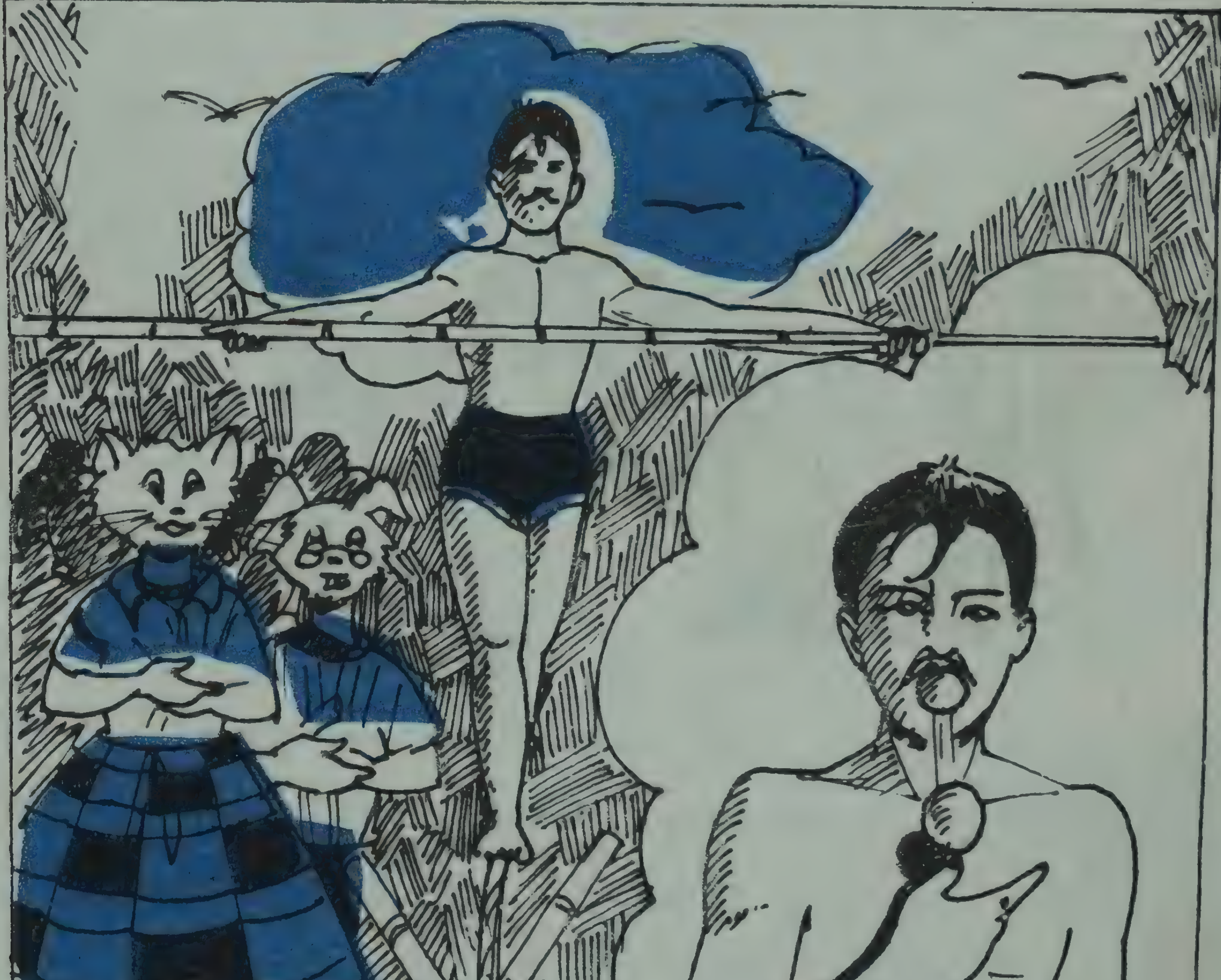


अपने हाथ का जाल एतवा ने गर्दन में लपेट लिया। मछली वाली टोकरी उसने पीठ पर लटका ली। वह उन लड़कों का पीछा करना शुरु किया। वह पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था। दोनों लड़के अभी कुछ ही दूर जा सके थे, एतवा को अपनी ओर आते देखकर वे चौकन्ना हो गये। वे और तेज भागने लगें।

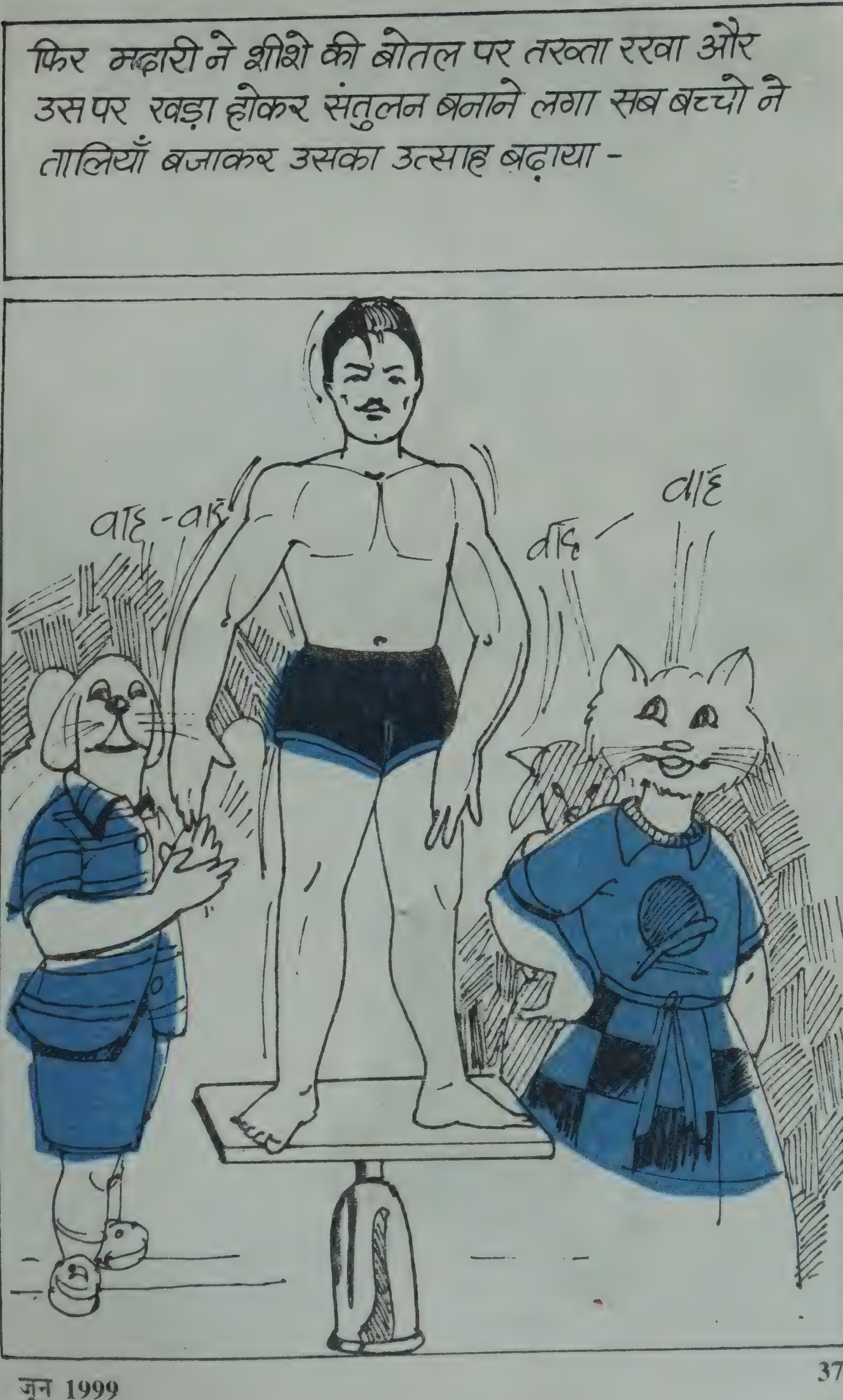
उन तीनों के दौड़ने से सन्नाटे जंगल में शोर-सा मच गया। हिरण चौकन्ने हो गये। वे इधर-उधर भागने लगे। उन्हें भागते देखकर चिड़ियाँ चहचहाने लगी। बंदर भी किलकारियाँ मारकर डाल पर भागने लगें। पूरे जंगल में खतरे की घंटी बज गयी। खतरे की घंटी बजाने वाले जंगली जानवर थे। उस भाषा और घंटी को जंगली जानवर ही समझ सकते थे। लेकिन जंगल और जानवरों के बीच रहने से एतवा भी उनकी भाषा समझता था।

कुछ दूर जाकर एतवा ने उन लड़कों को धर दबोचा। **क्रमशः**





पूसी गर्मियों की छुट्टियों में अपनी नानी के घर गई। वहाँ पर एक मदारी आया, उसने रस्से पर डंडे की सहायता से चलकर दिखाया। और फिर उसने अपने मुँह से लोहे के गोले निकाले –


फिर मदारी ने शीशे की बोतल पर तख्ता रखा और उस पर खड़ा होकर संतुलन बनाने लगा सब बच्चों ने तालियाँ बजाकर उसका उत्साह बढ़ाया -
वाह-वाह
वाह
वाह


पूसी ने मदारी से प्रभावित होकर अपने मुँह में लोहे का गोला डाला पर जब निकालने लगी तो वह उसके मुँह में फँस गया !


फिर पूसी बोतल पर फट्टा रखकर संतुलन बनाने लगी और वह गिर पड़ी, जिससे उसके हाथ की हड्डी टूट गई -


उसे पलस्तर चढ़ गया
सब उसकी मजाक बनाते हैं
क्या हुआ पूसी !
पूसी रोती है, और कहती है, पता नहीं मदारी कैसे करता है देखने में तो आसान था -
देखो ! पूसी छोटे से कार्य में भी अभ्यास की आवश्यकता होती है ! दूर से देखकर बिना गुरू के कार्य करने से तुम्हारे जैसा हाल होता है !

कविता : रवीन्द्र कंचन

चिड़िया



आती रंग बिरंगी चिड़िया
जाती रंग बिरंगी चिड़िया,
डाली-डाली झूम-झूमकर
गाती रंग बिरंगी चिड़िया।



पेड़ों पर इठलाती चिड़िया
पत्तों में छुप जाती चिड़िया,
बाग बगीचे घूम घूम कर,
दाना चुग-चुग खाती चिड़िया।

आसमान छू आती चिड़िया,
झोंको से बतियाती चिड़िया,
आँगन देहरी फुदक फुदककर,
सबका मन बहलाती चिड़िया।



फुर्र-फुर्र उड़ जाती चिड़िया
बच्चों के मन भाती चिड़िया,
खुश रहती है देखो हरदम,
करना काम सिखाती चिड़िया।





डॉ. अंकल के उत्तर

□ डॉ. कुंदन कुमार

— सोनिया

प्रश्न : मेरी उम्र 14 वर्ष है। मेरे मुँह पर लड़कों जैसे बाल उग गए हैं जिससे मुझे बहुत शर्म आती है। कृपया कोई ऐसा उपाय बताएँ जिससे यह बाल कभी न हों और सदा के लिए खत्म हो जाए और मेरा चेहरा अच्छा लगे।

उत्तर : खेजड़ी (जांटी) की फली, बिहुर बूटी, मैनमिस। सभी को बराबर 20-20 ग्राम मिलाकर पीस लें, 100 ग्राम नारियल के तेल में मिलाकर रख लें। सुबह-शाम क्रीम की तरह लगायें। लाभ होगा।

— दीपक कुमार (ईटारसी)

प्रश्न : डॉ. अंकल जी मेरी बहन के चेहरे पर जले का काला दाग है। कई मलहम व आयुर्वेदिक दवाईयाँ लगायीं पर कोई फायदा नहीं हुआ। कोई घरेलू उपाय बताएँ?

उत्तर : मुल्तानी मिट्टी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, मकई का आटा, हाथी की लीद। सभी बराबर भाग लेकर पीसकर रख लें। प्रतिदिन मक्खन में मिलाकर सुबह-शाम लगायें। लाभ होगा।

— गणेश शाह (दार्जलिंग)

प्रश्न : डॉ. अंकल, मेरे पैरों में पिछले कई महीनों से कई काले दाग हैं। काफी ईलाज के बावजूद भी ठीक नहीं हुए हैं। कृपया कोई इलाज बताएँ?

उत्तर : नागफनी, बकायन के पत्ते, क्रेक के पत्ते सभी बराबर भाग लेकर सरसों के तेल में मिलाकर जला लें। तेल को छानकर शीशी में भरकर रख लें। सुबह-शाम लगायें। लाभ होगा।

— रवि कुमार (अम्बाला)

प्रश्न : डॉ. अंकल, मुझे 15-16 वर्ष से बीड़ी पीने की आदत है। मैं बीड़ी छोड़ना चाहता हूँ। कृपया कोई उपाय बताएँ?

उत्तर : सौंफ, जीरा, इलाइची व ब्राह्मी बूटी बराबर भाग लेकर भूनकर पीसकर रख लें। जब भी बीड़ी सिगरेट पीने की इच्छा हो थोड़ा मुंह में डाल लें। बीड़ी, सिगरेट की पीने की इच्छा नहीं होगी।

समाचार

शाकाहार, कैंसर को रोकता है

ताइवान की 'राष्ट्रीय विज्ञान परिषद' ने यह निष्कर्ष दिया—नियमित शाकाहारी भोजन कर वालों में फेफड़ों का कैंसर होने के 75 प्रतिशत, यकृत का कैंसर न होने के 60 प्रतिशत औ कोलोन कैंसर होने के 40 प्रतिशत अवसर कम हो जाते हैं। रिपोर्ट के अनुसार सब्जियों में मुख रूप से सेलेनियम नमक खनिज, विटामिन ए,बी,सी, और एरोटीन होते हैं जो कैंसर होने स बचाते हैं। अतः शाकाहार का उपयोग कैंसर को रोकता है।

2000 कि.मी. तक मार करने वाले अग्नि-दो का सफल परीक्षण

11 अप्रैल 1999 को चाँदीपुर (उड़ीसा) के पास एक द्वीप से अग्नि-दो नामक प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण किया गया। 2000 से भी अधिक किलोमीटर तक प्रहार करने वाले और परमाणु आयुध वहन करने में सक्षम मध्यम दूरी के बैलेस्टिक प्रक्षेपास्त्र 'अग्नि-दो का सफल परीक्षण करके भारत ने अपना नाम उन गिने-चुने विकसित देशों की श्रेणी में ला खड़ा किया जिनके पास इस किस्म की अत्यन्त परिष्कृत, सूक्ष्म एवं उच्चतम तकनीक उपलब्ध है। इसमें ऐसी प्रणाली का इस्तेमाल किया गया है जो सम्भवतः अभी तक किसी देश के पास नहीं है।

बच्चों को लघुशंका के बारे में बताने वाला यन्त्र

जापानी वैज्ञानिकों ने पन्द्रह लाख डालर की एक ऐसी मशीन बनायी है, जिसमें लगा इलैक्ट्रॉनिक अलार्म बच्चे को लघुशंका के बारे में सतर्क कर देता है। यह यन्त्र बच्चों की मस्तिष्क तरंगों और मूत्राशय के प्रबोधन पर कार्य करता है। जब बच्चों को लघुशंका लगती है तो इसका अलार्म बजने लगता है और बच्चा उससे निवृत्त होने चल देता है। यह यंत्र 30 से.मी. चौड़ा और 50 से.मी. लम्बा है।

घड़ी भी फोन भी

दक्षिण कोरिया की समसुंग इलैक्ट्रोनिक कम्पनी ने एक ऐसा 'वाच फोन' तैयार किया है जो समय देखने और बातें करने के, दोनों उद्देश्यो को एक ही उपकरण में पूरा करता है।

इस फोन का वजन कुल 39 ग्राम है जबकि लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई क्रमशः 67-58-20 मिलीमीटर है।

बच्चों का विशाल समारोह चंडीगढ़ में

चण्डीगढ़। अप्रैल माह में यहाँ बच्चों का एक विशाल समारोह हुआ। इसे 'मानव एकता उत्सव' के नाम से सन्त निरंकारी मण्डल के बाल-विभाग के इन्चार्ज श्री केशोराम जी ने आयोजित किया। चंडीगढ़ तथा आस-पास के 33-नौजवानों तथा बच्चों को उनकी प्रतिभाओं के लिये पुरस्कार

दिये गये। समारोह में आनन्दपुर साहिब के डिप्टी कमिश्नर श्री निरंजन सिंह जी (आई.ए.एस), महात्मा श्री सी.एल. गुलाटी तथा सन्त मोहिन्दर सिंह जी ने भी भाग लिया। पत्रकारों से बात करते हुए निरंकारी मिशन के जोनल इन्चार्ज श्री के.आर नन्दवानी ने बताया—समस्त भारत में इस प्रकार के कुल 600 केन्द्र हैं जहाँ बच्चों व नौजवानों में आध्यात्मिक संस्कार डाले जाते हैं। बच्चों के मानसिक विकास की ऐसी सुन्दर योजना की मुख्य अतिथि ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हँसती दुनिया के लेखक श्री दर्शनसिंह आष्ट की बाल पुस्तकों का विमोचन

पटियाला (पंजाब)। पिछले दिनों पंजाबी विश्व विद्यालय में कार्यरत और सम्मानित पंजाबी बाल साहित्य लेखक दर्शन सिंह आष्ट की दो पंजाबी बाल साहित्य पुस्तकें 'बाल बातां' और 'बाल गीत' (सम्पा.) का विमोचन पंजाबी बाल साहित्य अकादमी (पंजी.) द्वारा यहाँ भाषा भवन, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला में किया गया।

विश्व योग प्रतियोगिता में भारत-द्वितीय स्थान पर

पिछले दिनों अर्जेंटाइना में आयोजित विश्व योग प्रतियोगिता में भारतीय टीम मात्र एक अंक से दूसरे स्थान पर रह गई। टीम का एक सदस्य अचानक ही पेट दर्द से पीड़ित होने के कारण अपना प्रदर्शन नहीं दिखा पाया, जिससे अंक कम मिले।

मेजबान अर्जेंटाइना को स्वर्ण, भारत को रजत तथा ब्राजील को कांस्य पदक देकर सम्मानित किया गया। भारतीय योग टीम का नेतृत्व यमुना नगर की शालिनी मल्होत्रा ने किया।

क्रिकेट टूर्नामेण्ट का उद्घाटन

निरंकारी बाबा हरदेव जी महाराज ने पिछले माह 'एन. सी. डी. पी. क्रिकेट टूर्नामेण्ट' का उद्घाटन किया व खेल भावना से पूरे विश्व को जुड़ने का आशीर्वाद दिया। दिल्ली में नौजवानों को खेल से जोड़ने के लिये क्रिकेट टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया। दिल्ली के जाने-माने मान्यता प्राप्त लगभग 30 क्लबों ने इसमें आवेदन किया। परन्तु अन्तिम निर्णय में उन 18 क्लबों को अवसर दिया गया जो प्रथम श्रेणी के सभी मापदण्डों को पूरा करते थे। 'एन.सी.डी. पी' के कोच श्री बन्टी व उनकी टीम के प्रयासों से इस टूर्नामेन्ट का आयोजन सफल हो सका।

समाचार लिखे जाने तक टूर्नामेण्ट का सैमीफाइनल राउण्ड खेला जा रहा था।

उद्घाटन समारोह में देश के उच्च कोटि के कोच उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री भटनागर जी 'ए. ग्रेड' कोच ने मिशन की ओर से क्रिकेट अकादमी प्रारम्भ करने का आशीर्वाद माँगा।

— हँसती दुनिया संवाददाता राम कुमार 'सेवक' द्वारा

पढ़ो और हँसो

एक जंगल में एक हाथी रहता था। वह जहाँ भी जाता तबाही मचा देता था। एक बार हाथी को आता देखकर सभी चूहे अपने बिल में घुस गये। एक चूहे ने पैर बाहर निकाल रखा था। दूसरे ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि जब हाथी यहाँ से जायेगा तो मैं उसे टंगड़ी अड़ा दूँगा।

— इन्दू कुमार शर्मा (गीता एन्क्लेव, मथुरा)

डाकू : (सेठ से) बोलो सेठ जान देते हो या माल?

सेठ : भाई जान ही ले लो, माल तो बुढ़ापे में काम आयेगा।

— विकास बंसल 'विक्की' चौटाला (सिरसा)

एक दोस्त : (दूसरे दोस्त से) यार! मेरा अमेरिका जाने का विचार है। कितना खर्च होगा?

दूसरा दोस्त : विचार तो मुफ्त में ही चला जायेगा, कोई खर्चा नहीं होगा।

— सरिता चौधरी (दिल्ली)

ड्राईवर : (मालिक से) साहब! अब गाड़ी आगे नहीं जा सकती। गाड़ी में पैट्रोल खत्म हो गया है।

मालिक : ठीक है फिर वापस घर ले चलो।

— हेमन्त कुमार सारस्वत (गीता एन्कलेव, मथुरा)

दो आलसी कम्बल ओढ़कर सो रहे थे। इतने में एक चोर आया और कम्बल लेकर भाग गया।

पहले आलसी ने लेटे-लेटे शोर मचाया। — अरे चोर-चोर पकड़ो-पकड़ो।

दूसरा आलसी :अरे चुप! जब तकिया लेने आएगा तो पकड़ लेंगे।

— तिलक, पूजा, सोतिया (जीन्द जं.)

शिक्षक : (छोटे बच्चे से) बताओ हाथी की क्या पहचान है?

छात्र : हाथी की दो दुम होती है। एक आगे की ओर, दूसरी पीछे की ओर।

— रेणुका निरंकारी (कुरखेड़ा)

पति : आज शाम को खाना हम किसी होटल में खाएंगे।

पत्नी : क्यों? क्या आपको मेरे हाथ का खाना पसन्द नहीं है।

पति : नहीं ऐसी कोई बात नहीं। आज मेरा बर्तन साफ करने का मूड नहीं है।

— वन्दना चौधरी (दिल्ली)

एक छोटा सा नटखट बच्चा थाने में आकर सिपाही से बोला— अंकल, मैं गुम हो गया हूँ।

सिपाही : अच्छा बेटे, तुम कहाँ रहते हो?

बच्चा : यही पता लगाने तो मैं यहाँ आया हूँ।

— शत्रुघ्न सिन्हा (मुजफ्फरपुर)

पत्नी : (पति से) आज मैंने सपने में देखा कि आपने मुझे नई साड़ी खरीद कर दी है

पति : ठीक है वही साड़ी अपनी शादी की सालगिरह पर पहन लेना।

— नेहा परसवानी (जालना)

पहला दोस्त : यार मुझे घर जल्दी जाना है मेरी पत्नी भूखी बैठी रहेगी।

दूसरा दोस्त : वाह तुझे कितनी अच्छी पत्नी मिली है जो खाने के समय तेरा इंतजार करती है।

पहला दोस्त : इंतजार क्या खाक करती है घर जाकर खाना तो मुझे ही बनाना है।

\+ + +

पुलिस : (व्यक्ति से) तो तुम अपनी पत्नी को छोड़कर आए हो? भगोड़े हो।

व्यक्ति : आपने मेरी पत्नी को यदि देखा होता तो आप मुझे भगोड़ा नहीं, शरणार्थी कहते साहब।

— राणा हमीर निरंकारी (पालड़ी)

दुकानदार : दिखाओ वह घड़ी, जो तुम बेचना चाहते हो?

चोर : हजूर, अभी तो वह सामने वाले सेठ की कलाई पर बंधी है। रेट तो बताओ अभी उतारकर ला देता हूँ।

— आशीष चौधरी (दिल्ली)

अप्रैल अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : कु. सरोजनी शिवनानी (आयु 12 वर्ष)
झूले लाल कालोनी
अजय नगर, अजमेर - 305001

द्वितीय : सुपर्णा कपूर (आयु 9 वर्ष)
पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

तृतीय : कु. कल्याणी लाकडे (आयु 10 वर्ष)
महल, नागपुर - 440002

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं —

नैना कुमारी (ओबरा, सोनभद्र), करुणा लूथरा (केशव नगर, सहारनपुर), अरविन्दर कौर (दूरदर्शन कालोनी, जालन्धर), अनुराग सिंह तोमर (कटरा साहब खाँ, इटावा), दीपा गुरनानी (आगरा), श्वेता अग्रवाल (ओबरा, सोनभद्र), शालिनी गोयल (कटरा साहब खाँ, इटावा), कौशिल्या रानी चुघ (करनाल), अंजलि ढींगरा (दौसा)

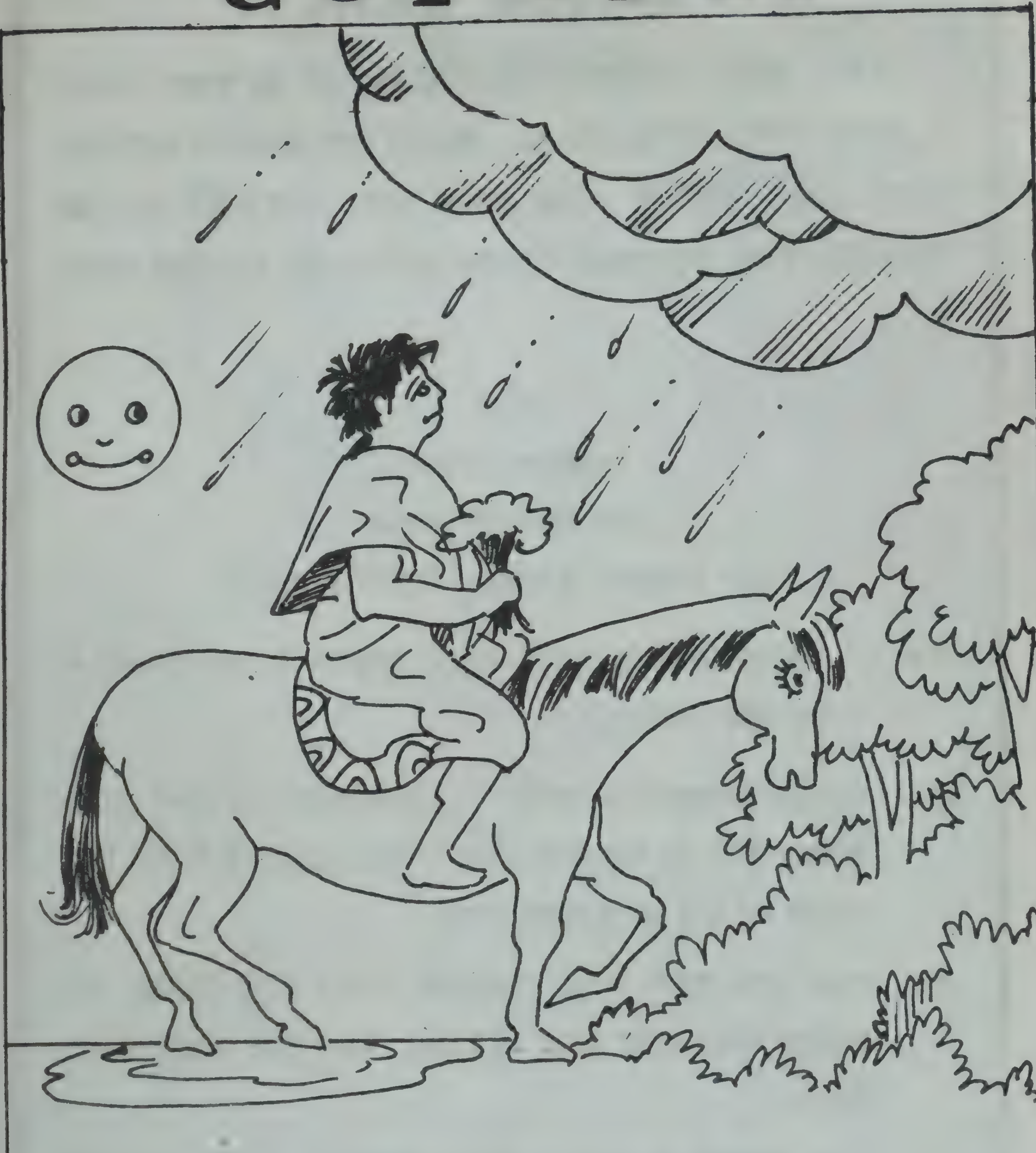
जून अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 25 जून तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के अगस्त अंक में की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं ।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

.... पिन कोड

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं । यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं –

सचिव,
(प्रकाशन विभाग)
सन्त निरंकारी मण्डल
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

कहानी : संगीता शर्मा व दिनेश दर्पण

दीनबंधु



एक बार दीनबन्धु ऐंड्रूज भारत भ्रमण करते हुए लखनऊ पहुँचे। लखनऊ स्टेशन पर गाड़ी बहुत देर तक रुकने पर वे प्लैटफार्म पर आकर घूमने लगे। वे घूमते-घूमते मुख्य प्लैटफार्म पर पहुँचे तो उनकी नजर एक बुढ़िया पर पड़ी। स्टेशन मास्टर उस बुढ़िया को बुरी तरह से डाँट रहा था और वह काँपती हुई उनके कमरे से बाहर निकल रही थी। स्टेशन मास्टर का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। स्टेशन मास्टर चिल्ला-चिल्लाकर उसे डाँट रहा था और वह गिड़गिड़ाते हुए उनके पैर पकड़कर कह रही थी— साहब हमें माफ कर दीजिए, मैं नहीं जानती थी कि आपके आफिस में प्रवेश कर तापकर सर्दी से बचना मना है।

यह नजारा देखकर दीनबन्धु ऐंड्रूज भी वहाँ खड़े हो गये और पूछताछ करने लगे तो उन्हें पता चला कि यह बुढ़िया कहीं बाहर जा रही थी। मगर गाड़ी छूट जाने पर वह वहीं रह गई। उसके पास कोई कपड़ा भी नहीं था जिसे ओढ़कर वह सर्दी से बच सकती। तभी उसे पास ही के एक कमरे में अंगीठी जलती दिखाई

दी। वह नहीं जानती थी कि यह स्टेशन मास्टर का कमरा है। वह सर्दी से बच के लिए उस कमरे में जाकर आँच तापने लगी। बस यही अपराध था उसका। भल स्टेशन मास्टर उस मैले-कुचेले फटे वस्त्रों वाली गरीब बुढ़िया का अपने कार्याल में प्रवेश कब सह सकते थे। वे फुर्ती से अपनी कुर्सी पर से उठे और उसे बु तरह डाँटते हुए बाहर निकाल दिया। पूरी घटना जानकर दीनबंधु ऐंड्रूज सन्न र गये।

एक औरत जो अनपढ़ है, यदि अनजाने में सर्दी से बचने के लिए आफि में प्रवेश कर गर्मी तापकर सर्दी से बचना चाहे तो, यह तो कोई अपराध नह है जिसे बुरी तरह अपमानित कर निकाला जाए। वे स्टेशन मास्टर र



बोले—महोदय, आप बेकार में ही इस गरीब महिला पर क्यों क्रोधित हो रहे हैं। ऐसा क्या किया है इसने जो आप इस पर इतना अधिक आगबबूला हो रहे हैं? बेचारी आपके कहते ही तुरन्त कमरे से बाहर आ गई। क्या आप इसी तरह मुसाफिरों की सेवा करते हैं? आपकी वेशभूषा से आप मुझे ईसा मसीह के अनुयायी नज़र आते हैं। ईसा मसीह के अनुयायी में नम्रता, सेवा व स्नेह होना चाहिए पर आप में तो क्रोध, घृणा व आपकी जीभ पर कटुता बसती है। आपके लिए यह बहुत शर्म की बात है। आप अपने आप को सुधारें यह कहते हुए दीनबंधु ने अपनी कीमती ऊनी शाल उस बुढ़िया को ओढ़ा दी और आगे बढ़ गये। गर्दन झुकाकर लज्जित होते हुए स्टेशन मास्टर अपने कमरे में जा घुसा। ●

याद रखने योग्य बातें

संग्रहकर्ता : चित्रमाला (खलीलाबाद)

- सर्वोत्तम दिन -- आज
- सबसे उपयुक्त समय -- अभी
- सबसे बड़ी आवश्यकता -- ब्रह्मज्ञान
- सबसे बड़ी बाधा -- अधिक बोलना
- सबसे बुरी भावना -- ईर्ष्या
- सबसे बड़ा सुख -- सन्तोष धन
- सबसे बड़ा मानव शत्रु -- आलस्य

आवश्यक सूचना

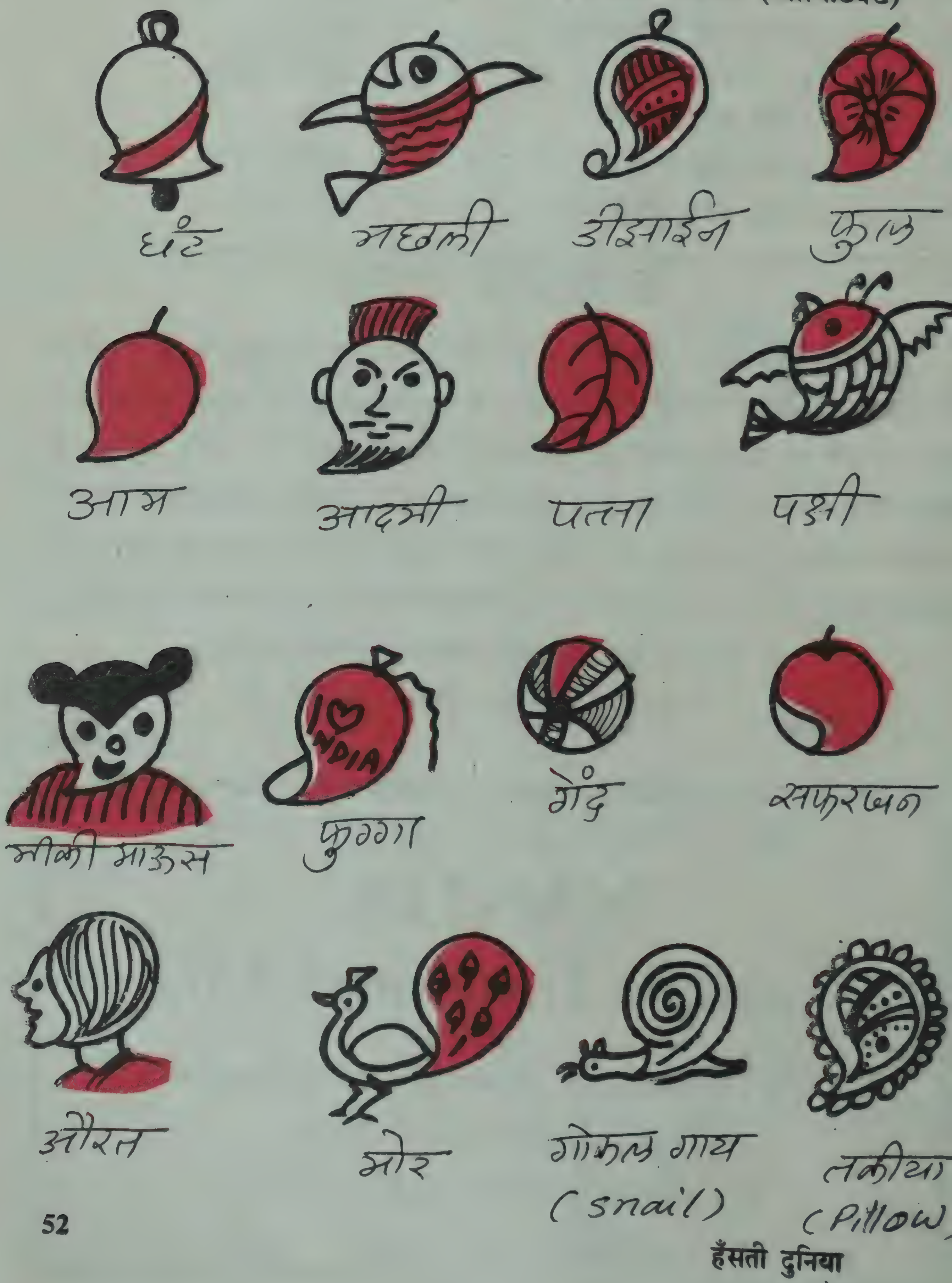
हमारे वे सभी ग्राहक जिन्होंने इस वर्ष निरंकारी सन्त समागम के शुभ अवसर पर अर्थात् नवम्बर 1998 में हँसती दुनिया के सदस्य बने हैं। या उन्होंने पुराना चन्दा जमा कराया है। उनकी रसीद का नम्बर यदि HD 70401 से HD 70500 के बीच वाला है और उन्हें हँसती दुनिया नहीं मिल रही तो कृपया पूर्ण विवरण के साथ (यदि सम्भव हो तो रसीद की फोटो कापी सहित) कार्यालय हँसती दुनिया को निम्नलिखित पते पर लिखें ताकि उन्हें पत्रिका नियमित रूप से भेजी जा सके –

सचिव, सन्त निरंकारी मण्डल (पत्रिका विभाग)
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली 110009

— व्यवस्थापक

आओ बनाएं, 'आम' से दुनिया

– रजनीकांत सापला (आर्किटेक्ट)



कविता : अरविन्द्र कौर

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया है सुंदर प्यारी प्यारी,
सब गुड़ियों से है वह न्यारी।
हरदम रहती वह मेरे पास,
होने न देती मुझे कभी उदास।
पहने कपड़े रंग-बिरंगे लाल काले,
है उसके बाल सुनहरे घुंघराले।
भोली-भाली सूरत प्यारी-2 आँखें,
काश! वह कर पाती बातें।
मुख से कुछ न कह पाती,
फिर भी मेरी दिल बहलाती।
कोई क्या जाने उसका मोल,
है वह मेरे लिए अनमोल।



वर्ग पहेली के उत्तर

(1) अ	स	(2) म		(3) आ	म
मृ		(4) ह	रि	या	णा
(5) त	मि	ल		त	
स					(6) सू
(7) र	(8) म	न		(9) था	र
	नी		(10) जा	लं	दा
(11) का	ला	पा	नी		स

सफलता के द्वार

प्रेषक : किशोर.जी. खूबचंदानी (अहमदनग



- ❖ अक्लमंदी से कार्यक्रम बनायें।
- ❖ निश्चय में ढीले न रहें।
- ❖ रचनात्मक रूप से विचार करें।
- ❖ गहराई से सोचें।
- ❖ व्यापार में समझदारी से धन लगायें।
- ❖ मन लगाकर काम करें।
- ❖ मन से सेवा करें, हृदय से प्रार्थना करें।
- ❖ उचित कामना करें।
- ❖ समझ बूझकर खतरा मोल लें।
- ❖ बहादुर की तरह जीयें।
- ❖ अपनी बात संक्षेप में कहें।
- ❖ बात ध्यानपूर्वक सुनें।
- ❖ खुले दिल से भूल स्वीकार करें।
- ❖ विवाद में बुद्धिमता बरतें।
- ❖ मिताहारी बनें।
- ❖ प्रतीक्षा में धीरज रखें।
- ❖ मधुरता से हँसें, सदैव प्रसन्नचित रहें।
- ❖ स्वागत प्रसन्नतापूर्वक करें।
- ❖ बड़ाई ईमानदारी से करें।
- ❖ सांस गहरी लें, नित्य स्नान करें।
- ❖ कसरत करना न भूलें, जल धीरे-धीरे पियें।
- ❖ समय से सोयें, समय से उठें।
- ❖ खेल के समय जरूर खेलें।
- ❖ चुनकर पुस्तकें पढ़ें, एकाग्रचित होकर अध्ययन करें।

बालगीत



मेरे नन्हें मित्र तुम
युग के मानचित्र तुम
भव्यता के भाल तुम
भविष्य की मशाल तुम।

चलो पवन की चाल से
बढ़ो-बढ़ो भूचाल से
कंठ में हो भैरवी
थकें कभी न पैर भी
हो तिरंगा हाथ में
धैर्य शक्ति साथ में
उठो सुबह के गान तुम
बजो तुरही समान तुम।

सामने आदर्श हो
उत्कर्ष-तेज हर्ष हो
अजेय बाल भारती
बाल कृष्ण सारथी
माँ तुम्हें दुलारती
आरती उतारती
शौर्य के विकल्प तुम
सर्वश्रेष्ठ गल्प तुम

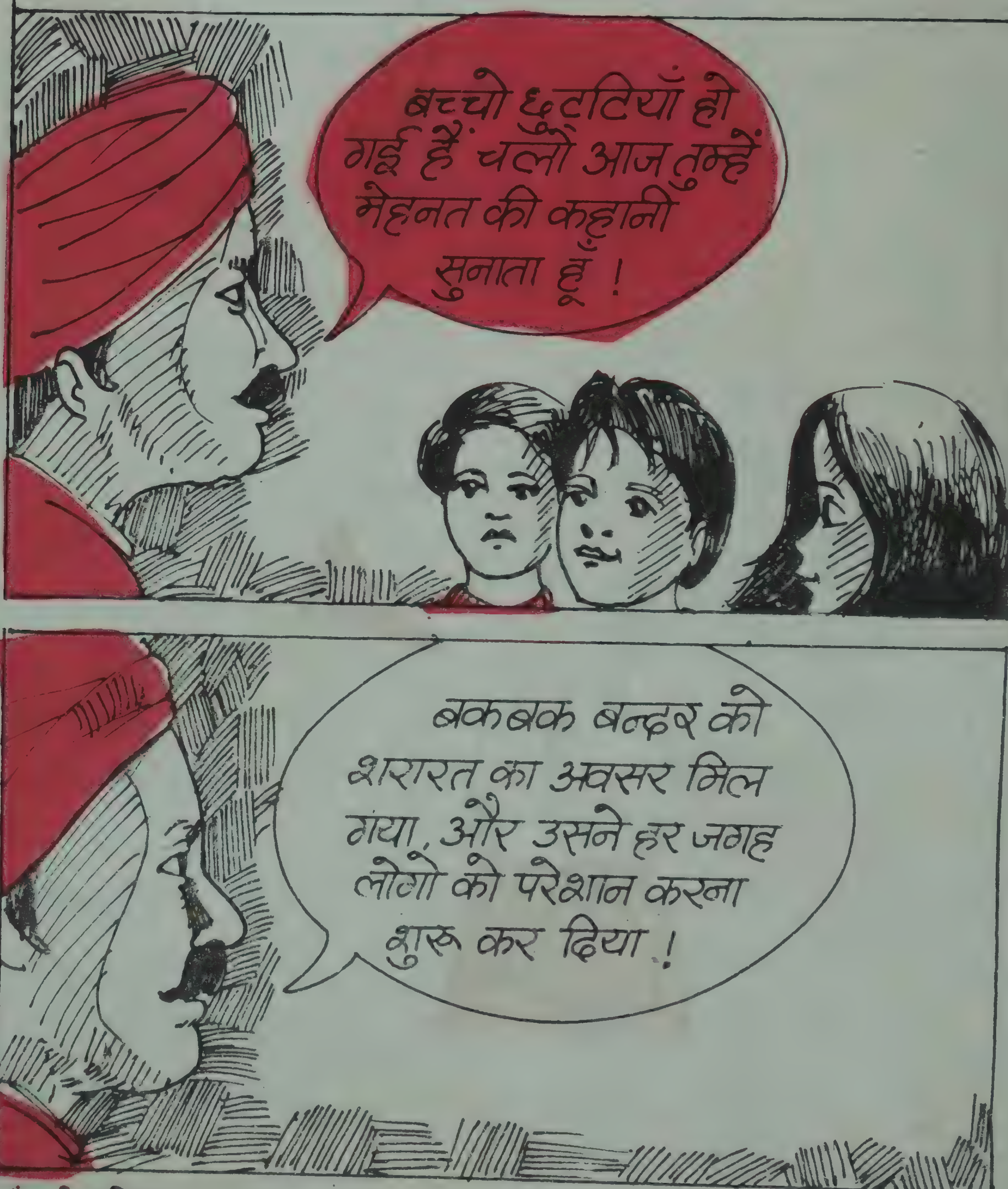
अणुबमों से तीर से
बढ़ो कि शूरवीर से
शत्रु को पछाड़ते
जय निशान गाड़ते
जियो वतन के वास्ते
डरो नहीं बमों से तुम
झुको नहीं गमों से तुम



माँ के स्वप्न सत्य तुम
श्रेष्ठ हो वक्तव्य तुम
भव्यता के भाल तुम
भविष्य की मशाल तुम।

मास्टरजी

चित्रांकन : नितिन रुहलावत   कहानी : शिखा जोशी




बकबक ने चिड़िया का घोसला एक डाल से उठाकर दूसरी डाल पर रख दिया-


बकबक ने अचानक खरगोश के ऊपर छलाँग लगा दी और फिर उसने बारह सिंगे के सींग पेड़ से बाँध दिए!


बकबक ने बकरी के बगीचे के सारे पौधे तोड़ डाले और उसका पूरा बगीचा बरबाद कर दिया-
बकबक के पिता को कहकर बकरी ने उसे लकड़ी काटने की सजा दिलवा दी-


बक-बक जब काम करते-करते थक गया तो बकरी ने उसे, लस्सी तथा मक्खन दिया! उसने भर पेट खाया-पिया!
बक-बक बन्दर ने पूछा बकरी आँटी आज लस्सी में क्या डाला है! पहले कभी इतनी स्वादिष्ट लस्सी नहीं दी।
बकरी ने कहा
कुछ नहीं बेटा अभी तक तुम बिना मेहनत के चुराकर लस्सी पिया करते थे। आज तुमने मेहनत करके पी है और यह मेहनत का स्वाद है!
देखा बच्चो! यही सत्य है, मेहनत से कभी भी जी नहीं चुराना चाहिए, मेहनत का फल सच में बड़ा स्वाद होता है!

कहानी : राहुल शर्मा

सपना यूँ पूरा हुआ

एक बार की बात है। एक शहर में मध्यवर्गीय परिवार का एक लड़का रहता था। उसका नाम था सिद्धान्त। वह सदा बड़ा आदमी बनने के सपने देखता रहता। इसकी वजह थी कि जब वह अपने माता-पिता को दिन-रात मेहनत करते देखता था तो वह यही सोचता कि मैं बड़ा होकर अपने माता-पिता को दुनिया के सभी ऐशो-आराम दूँगा।

सिद्धान्त का यह सोचना यूँ तो कोई खास बात नहीं थी। परन्तु उसके घर के हालात को देखते हुए उसकी यह सोच वाकई में काबिले-तारीफ थी।

सिद्धान्त पूरा दिन व सारी रात अमीर बनने के ख्याल में खोया तो रहता था। परन्तु अपनी सोच के मुताबिक वह कोई ऐसा खास कार्य नहीं करता था जिसको देखकर यह लगे कि वह वास्तव में धनी बनने की कोशिश कर रहा है।

सिद्धान्त बारहवीं कक्षा का छात्र था। परन्तु वह पढ़ाई को छोड़ अन्य सभी कार्यों में, खासकर खेलने को ही अधिक प्राथमिकता देता था। अतः धनी बनने का उसका सपना सिर्फ सपना ही दिखाई पड़ता था।

एक बार सिद्धान्त को उसके स्कूल की क्रिकेट टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। यह खबर सुनकर वह अति प्रसन्न था। परन्तु जब उसने यह बात अपने माता-पिता को बताई तो उसे सिवाय फटकार के और कुछ हासिल न हुआ। उसकी माँ ने उसे फटकारते हुए कहा—जीवन में यदि तुम खेलना भी चाहते हो तो भी



पढ़ाई की आवश्यकता पड़ेगी। हालांकि आदमी अगर ऊँचे मुकाम पर पहुँच जाए तो लोग उससे यह नहीं पूछते कि तुम कहाँ तक पढ़े हो? परन्तु फिर भी पढ़ाई तो हर क्षेत्र के लिए आवश्यक होती है चाहे थोड़ी ही सही।

अतः सिद्धान्त को अपने माता-पिता की यह बात सुनकर काफी धक्का लगा उसने तो सोचा था पुरस्कार की बात से उसे शाबाशी मिलेगी परन्तु उसकी खुशी को ग़म में बदलते देर न लगी। वह यह सोचता रहा कि यदि मैं किसी क्षेत्र में आगे बढ़ता हूँ तब भी मुझे घर से फटकार ही मिलती है और यदि नहीं बढ़ता तब तो डाँट मिलना स्वाभाविक ही है। वह यह सब कुछ सोचता हुआ गुस्से से वह आग बबूला होने लगा।

थोड़े समय बाद ही उसके क्रिकेट के प्रशिक्षक उसके घर पर आ गए। सिद्धान्त कुछ सोचता हुआ उन्हें देखता रहा। उन्होंने उसे उससे पूरी बात को विस्तारपूर्वक बताने को कहा।

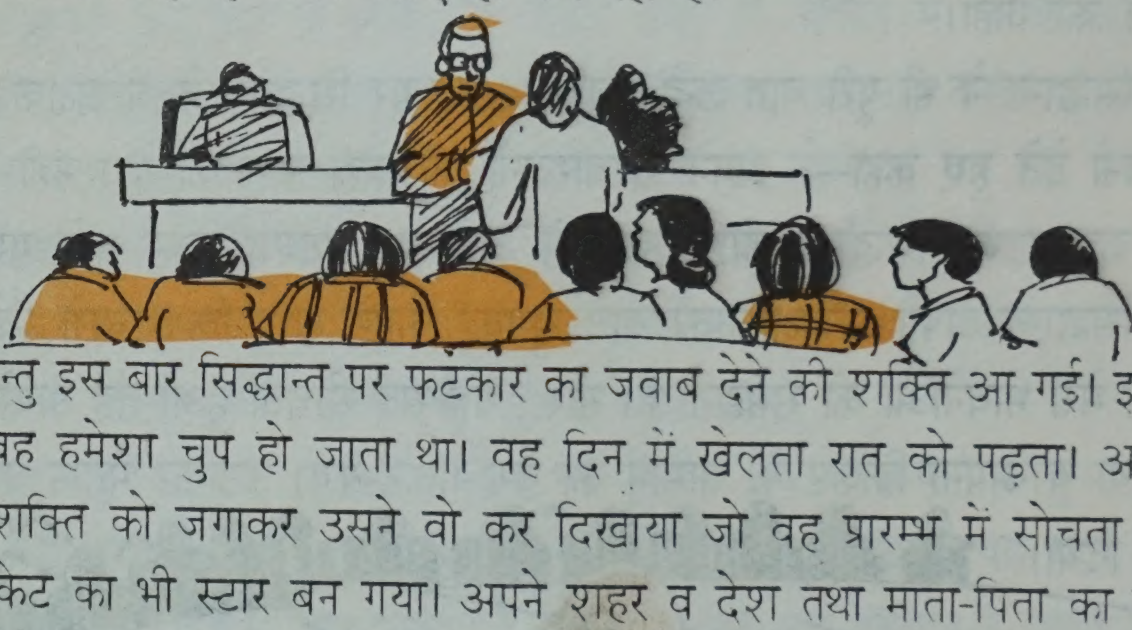
सिद्धान्त ने भी पूरी बात उन्हें बता दी। इस पर सिद्धान्त के प्रशिक्षक ने उसे सांत्वना देते हुए कहा— अपने परिवारजनों की कही बात का बुरा नहीं मानते। यह कहकर वह सिद्धान्त को ग्राउण्ड में आने का संदेशा देकर चले गए।

सिद्धान्त अपने प्रशिक्षक की बातें सुनकर कहने लगा कि ''चलो, कोई तो है जो मेरी भावनाओं को समझता है। खैर.. यह सब सोचता हुआ वह अपने कमरे में गया व अपना क्रिकेट के सामान का बैग (किट-बैग) उठाकर मैदान की ओर चल दिया।



अन्ततः वह दिन भी आ गया जब सिद्धान्त के स्कूल का मैच था। उसकी स्कूल की टीम ने क्रिकेट के हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर मैच जीत लिया। स्कूल की तरफ से सिद्धान्त और उसके साथियों को काफी पुरस्कार भी दिए गए और सभी ने उसकी जीत को सराहा व इसका श्रेय सिद्धान्त को दिया।

सिद्धान्त अपनी खुशी में मगन ही था कि उसे पता चला कि तीन-चार दिनों बाद उसका बाहरवीं का परिणाम भी आने वाला है। तीन-चार दिन बाद जब सिद्धान्त का परिणाम आया तो वह केवल 33 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण हुआ। घर जाकर जब उसने परिणाम बताया तो गुस्से से उसके माता-पिता ने कहा—सारा दिन खेल में ध्यान लगाओगे तो नम्बर तो कम ही आएंगे। यह बात सुनकर सिद्धान्त को काफी धक्का लगा। उसने कहा— चलो जो भी है पास तो हो ही गया। इसके जवाब में उसकी माँ ने फिर फटकारते हुए कहा—कौन-सा हम पर एहसान कर दिया; जो कर रहा है अपने लिए ही कर रहा है।



परन्तु इस बार सिद्धान्त पर फटकार का जवाब देने की शक्ति आ गई। इससे पहले वह हमेशा चुप हो जाता था। वह दिन में खेलता रात को पढ़ता। अपनी इच्छा शक्ति को जगाकर उसने वो कर दिखाया जो वह प्रारम्भ में सोचता था। वह क्रिकेट का भी स्टार बन गया। अपने शहर व देश तथा माता-पिता का नाम तो खेल के कारण ऊँचा कर दिखाया। उधर पढ़ाई में भी कम्प्यूटर इन्जीनियर बनकर गर्व से सिर ऊँचा कर लिया। अब उनके यहाँ धन, वैभव, सम्मान बरसता रहता है।

उसने अपने माता-पिता से कहा—सच है यदि आप समय-समय पर सुनार वाली चोट न करते तो मैं तो कभी आभूषण बन ही नहीं पाता। उसने मम्मी-पापा के चरण वन्दना की। उन्होंने भी उसे खुशी से गले लगा लिया।

— यह सच है कि माता-पिता व गुरू बच्चे के उस कुम्हार की तरह होते हैं जो कच्ची मिट्टी को घड़े का रूप देते समय ऊपर से चोट भी करता है व अन्दर से हाथ रखकर थामे भी रहता है।

आप के पत्र मिले

हँसती दुनिया का अप्रैल अँक देखा। इसकी सभी कहानियाँ, कवितायें, लेख आदि बालोपयोगी हैं। किशोर डैनियल की कहानी 'अनोखा खेल' और कु. अंशु शुक्ला की कविता, 'शिक्षा' विशेष रूप से पसंद आई। मेरा सुझाव है कि आप विज्ञान और जीव-जंतुओं पर नियमित रूप से लेख प्रकाशित करें।

— कुमार अभिषेक (भोपाल)

यह पत्रिका ज्ञानवर्धक व शिक्षाप्रद है। इसकी कहानियों से हमें शिक्षा मिलती है। और हम उस पर अमल करने की कोशिश भी करते हैं। दादा जी के उत्तर, समाचार, कभी न भूलो, डॉ. अँकल के उत्तर और कहानियाँ व कविताएँ सब बहुत ही पसन्द हैं।

— ज्योति, सुमित, गीतांशु

हँसती दुनिया में कहानियाँ, कविताएँ, चुटकले, दादा जी के उत्तर और अन्य अच्छी-अच्छी बातें और सीख रहती हैं हमें इन्हें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और हम सबको पढ़ने को देते हैं ताकि और बच्चे इसे पढ़कर कुछ सीख सकें।

— सुरूचि, हरपाल, हरप्रीत, विश्वप्रीत (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

हँसती दुनिया से हमें ज्ञान, धर्म, निति तथा स्वास्थ्य के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। अप्रैल अंक में फूल, भीखू का प्रयास, खोया हुआ भरोसा, कहानियाँ विशेष अच्छी थीं। 'कभी न भूलो' से हमें प्रत्येक माह धार्मिक उपदेशों की प्राप्ति होती है। सचमुच यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास की कुंजी है।

— राजकुमार (हावड़ा)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठिका हूँ। मैं पहली बार पत्र लिख रही हूँ। मैं और मेरे परिवार के लोग इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसके आने का हमें बेसब्री से इंतजार रहता है। इसमें पढ़ो और हँसो, कभी न भूलो, दादा के उत्तर और कहानियाँ सभी ज्ञानवर्द्धक लगीं। हमें आशा है कि इसी तरह आप हमारा मन बहलाते रहेंगे।

— मनीषा कुमारी (छपरा)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती हैं। इसमें गुण और रूप, भीखू का प्रयास, आदि कहानियाँ तथा दादा के उत्तर और पढ़ो और हँसो मुझे पसन्द आये। समाचारों से मुझे बहुत शिक्षा मिली।

— मानिक गुप्ता (जम्मू)

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया की हस्ती
जाने जहाँ की हर बस्ती।
प्रेम सभी में पैदा करती,
पढ़ते ही आती मस्ती।
छोटे-बड़े सभी को जंचती,
दाम में भी है ये सस्ती।
हँसती दुनिया का हर अंक,
प्रेरित करता इसके संग।
सत्य सरल और सुन्दर भाषा,
हो हम सब की अभिलाषा।

— दिनेश राय (आजमगढ़)


NEW
INDIA
TENT HOUSE
GOVERNMENT
CONTRACTORS
& SUPPLIERS
1, Ansari Market, Daryaganj
New Delhi-110002
PHONES
H.O. 3278742, 3260884
B.O. 3275121 RESI. : 3265975